चकमक

अगस्त, 2004

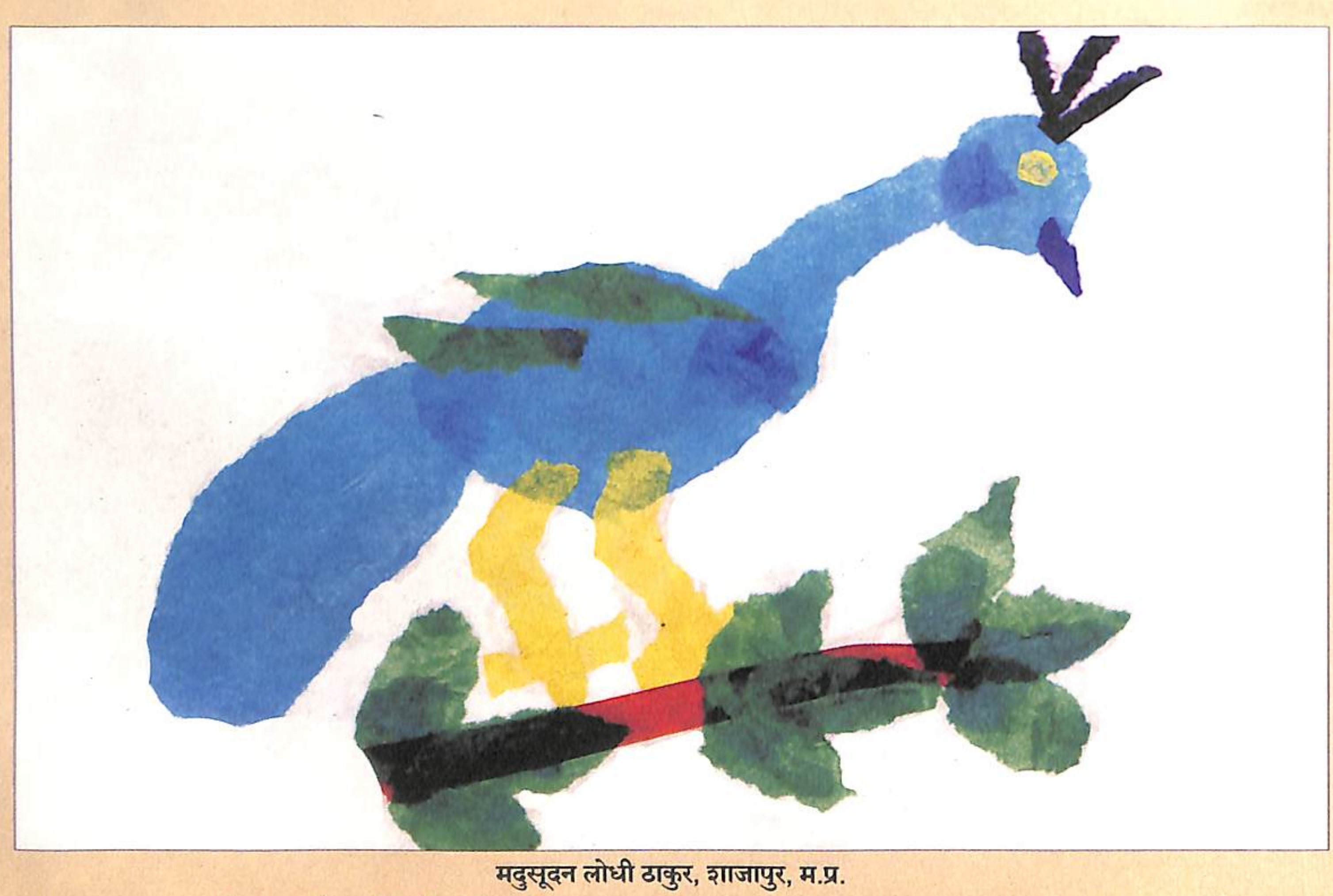
बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00





राहुल साहू, भोपाल, म.प्र.



मदुसूदन लोधी ठाकुर, शाजापुर, म.प्र.

आवरण : राज्य पुरातत्व संग्रहालय, भोपाल के सौजन्य से

इस बार की बात . . .

सबसे पहले तो तुम्हें न्यौता देना है... दरअसल बात यह है कि चकमक के नवम्बर अंक को हम 'मेरा पन्ना' अंक की शक्ल में निकालना चाहते हैं। अब भई 'मेरा पन्ना' अंक तुम्हारी मदद के बिना कैसे निकले! सो ये न्यौता है तुम्हें शामिल करने का। वैसे चकमक में ऐसे आयोजन तो पहले भी हुए हैं, कई बेहतरीन 'मेरा पन्ना' अंक निकले। पर इस बार का आयोजन खास होगा... क्योंकि इस बार इसमें तुम शिरकत करने वाले हो।

चलो पहले इसी अंक के बारे में दो-चार बातें कर लें। पहली बात तो ये कि तुम एक से अधिक रचनाएँ भेज सकते हो... हाँ और अलग-अलग विधा की भी - मसलन चित्र, घटना, कविता, कहानी ....! दूसरा और सबसे जरूरी यह कि ये रचनाएँ तुम्हारी अपनी लिखी हों। कहीं से नकल की गई न हो। रचनाओं के विषय के बारे में तुम्हें क्या बताएँ ... वह कुछ भी हो सकता है ... तुम्हारे साथ घटी कोई घटना, आसपास की कोई चीज़ जिससे तुम खुश या नाराज़ हो। कभी कहीं आते-जाते आसपास की कोई चीज़ तुम्हारी आँखों में बैठ गई हो या तुम्हें बार-बार याद आती हो। ऐसी किसी घटना का कोई खास दृश्य भी तुम उकेर सकते हो। पिछले दो तीन बार से तुम तरह -तरह केचित्र देख रहे होगे ... रबर के छल्लों से बनाए चित्र! कागज़ की चिंदियों से चित्र उर्फ कोलॉज! पत्तियों से चित्र! यानी कोई आकार जो तुम उकेरना चाहते हो! क्या उस आकृति की शक्ल या उसका कोई हिस्सा किसी पत्ती से मिलता है! मिलती-जुलती शक्ल की पत्ती से तुम उस आकृति को साकार कर सकते हो। एक रास्ता और भी है ... कोई पत्ती तुमने देखी! तुम्हें लगा अरे यह तो बिल्कुल फला चीज़ जैसी दिखती है। और फिर बस इस पत्ती को तुमने खास तरीके से रखकर एक खूबसूरत चित्र बनाया। इसमें पत्ती को काटने-पीटने की जरूरत भी नहीं होती है। यूँ तो सिर्फ पत्ती ही नहीं ऐसी कई चीज़ें दिखेंगी जो किसी और चीज़ की हमशक्ल लगेंगी। बस इसके लिए आसपास की चीज़ों को गौर से और रुककर देखने की ज़रूरत होती है।

एक और ज़रूरी चीज़ है रचना पर लिखा तुम्हारा पता! पता लिखते समय तीन-चार चीज़ों का ध्यान रखना... अपना नाम, उमर या कक्षा, घर का नम्बर, कॉलोनी का नाम, जगह का नाम, तहसील व ज़िले का नाम! अगर पिन कोड लिख सको तो और अच्छा! कुछ तकनीकी कारणों से हम इस माह का केलेण्डर नहीं दे पा रहे हैं।

उम्मीद है तुम सब रचनाएँ भेजोगे और हम एक बेहतरीन अंक निकाल पाएँगे।

● चकमक

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 20 - अंक-2 अगस्त 2004

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
टुलटुल विश्वास
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे

सहयोग
कविता सुरेश
राकेश खत्री
शिवनारायण गौर
शशि सबलोक

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई-7/ एच आई जी – 453
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन : 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।



एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-20 अंक-2 अगस्त 2004

क्या-क्या है इस अंक में



एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा और जनविज्ञान के क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।



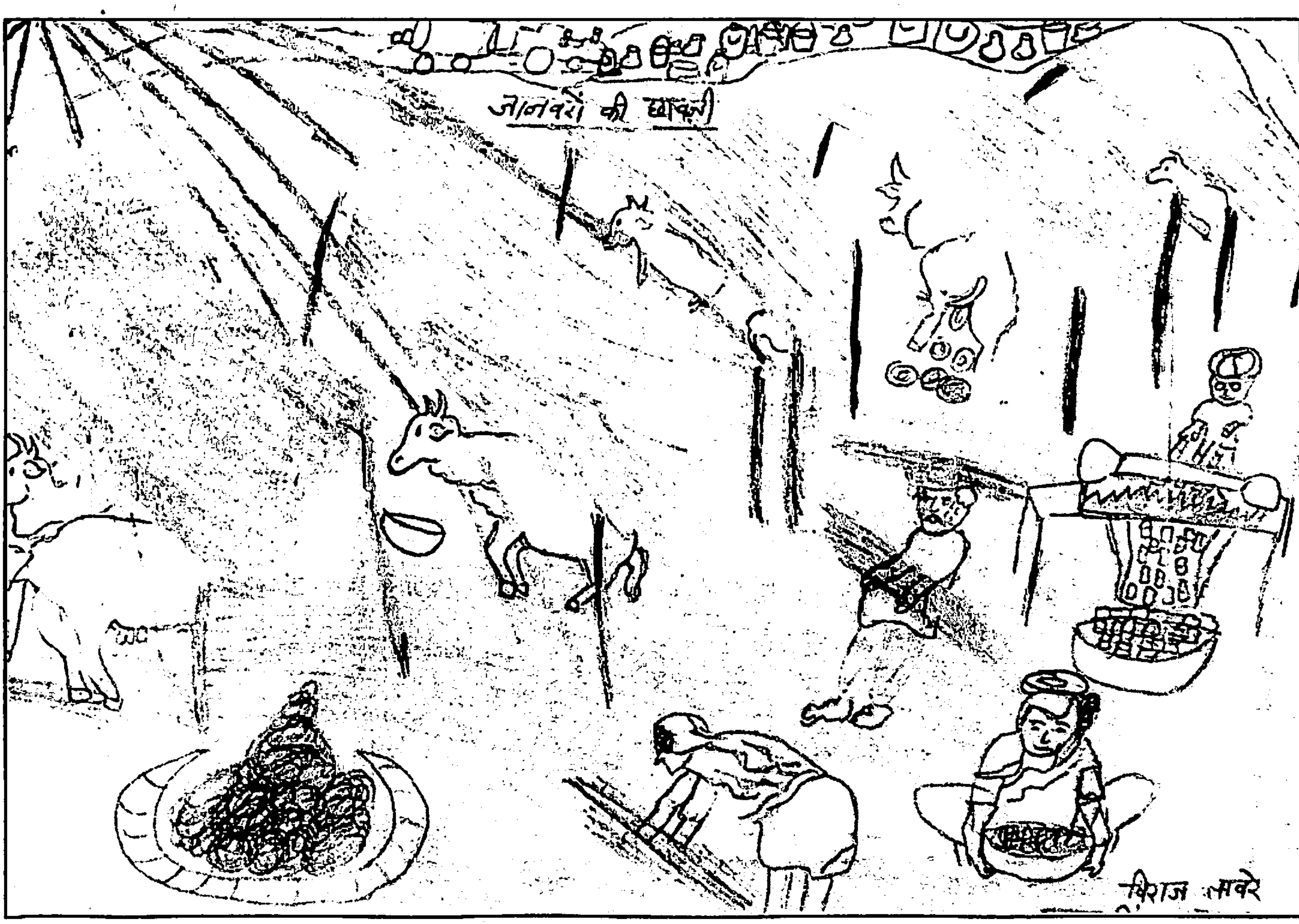


जानवरों की छावनी

हम चौथी के बच्चे छावनी क्या होती है - यह जानने के लिए हम फलटण से बीस किलोमीटर दूर गए। वहाँ हमने एक बूढ़े काका से पूछा कि छावनी का मतलब क्या होता है? यहाँ आप क्या काम कर रहे हैं? तो उन्होंने हमें बताया कि जहाँ सूखा पड़ा होता है, वहाँ जानवरों (गाय, बैल, बकरी, बछड़ा) को चारा नहीं होता है। इसलिए सरकार द्वारा की गई मदद को छावनी कहते हैं। छावनी में प्रत्येक बछड़े को सात किलो चारा और बड़े जानवरों को पंद्रह किलो चारा मिलता है। छावनी में हर घर के चार से छह जानवर हैं। जानवरों के लिए शेड बनाए गए हैं। छावनी में 5900 लीटर पानी का टेंकर रोज़ आता है। पता है यदि छावनी नहीं होती तो जानवर मर गए होते। और मुझे और मेरे जैसे अनेक बच्चों को दूध ही नहीं मिलता। बड़ों को चाय नहीं मिल पाती।

यहाँ के जानवर काफी कमजोर दिख रहे थे। बच्चों की तरह लोगों ने अपने जानवर पाले थे, पर उनकी हालत देखकर सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। हम बच्चों ने वसीमदादा, कलपीता बाई, सुवर्णा बाई के साथ चर्चा की। हमने ग्रुप बनाए और जिनके जानवर छावनी में थे उनकी मुलाकात ली।

● कहानी एवं चित्र : विराज तानाजी तावरे, चौथी, कमला निंबकर बाल भवन फलटण, महाराष्ट, (अनुवाद : शुभांगी तावरे)





खा रहे थे खीर

एक दिन बन्दर मामाजी
खा रहे थे खीर
तभी शिकारी ने डाल पर
खींच के मारी तीर
खा रहे थे खीर
बन्दर मामा लगे भागने
अपनी जान बचाके
जाकर ऊँची डाल पर बैठे
शिकारी से नज़र बचाके
टूट गई जो डाल थी पतली
मामा नीचे आए
देखा मुड़कर थोड़ी दूर पर
खड़ा शिकारी पीछे
बन्दर मामा भाग न पाए
फँसे जाल में उसके
चिड़ियाघर में पहुँच शौक से
बन्दर मामा उचके

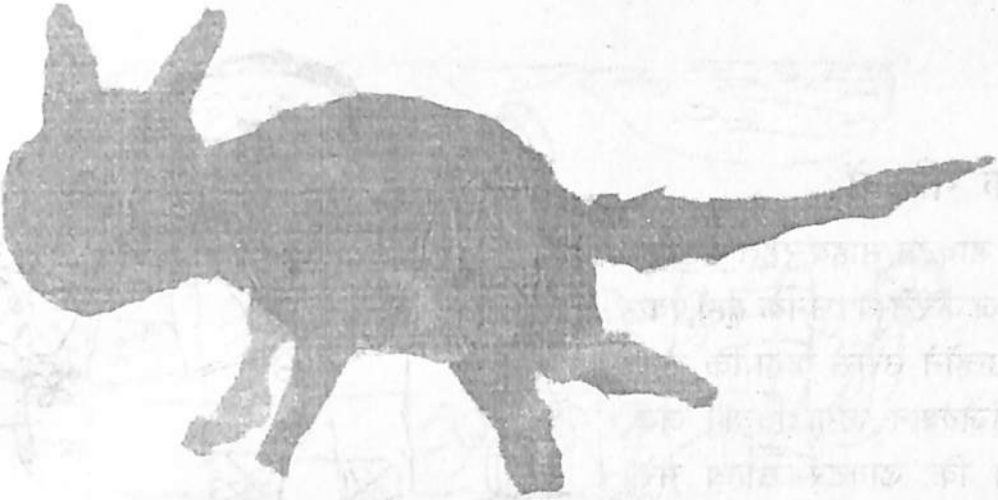
● सिराज अहमद, दसवीं, रुदौली, फैज़ाबाद, उ. प्र.



● चित्र : सिराज अहमद, दसवीं, रुदौली, फैज़ाबाद, उ. प्र.



● चित्र : झिनलाल, खरगोन, म. प्र.

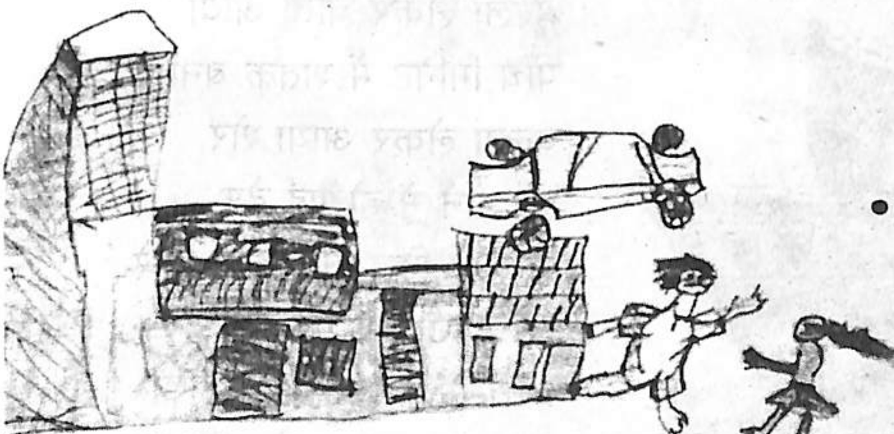


शम्भू और राना बड़े बदमाश हैं। उनको मछली ज्यादा अच्छी लगती है। उनके साथ एक बिल्ला लड़ने आता है। शम्भू तो लड़ लेता है पर राना नहीं लड़ पाता। राना को बहुत चोट लगती है। शम्भू को नहीं लगती। शम्भू राना बिल्ली के बच्चे हैं।

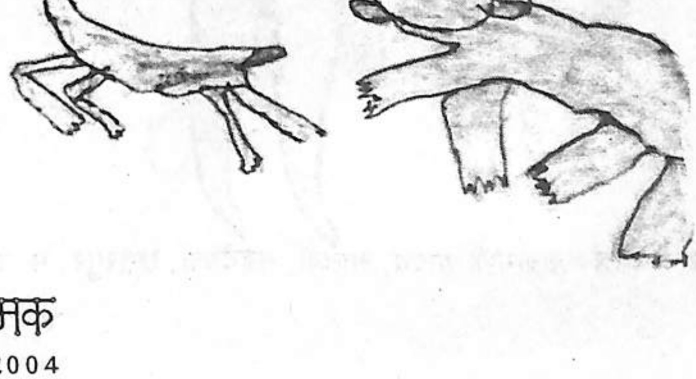
● मेहर, छह वर्ष, भोपाल, म.प्र.



● चित्र : ओमप्रकाश यादव (पता नहीं लिखा है)



● चित्र : राजेश, कंवलासा, खातेगाँव, देवास, म. प्र.





एक गाँव में...

एक गाँव में एक डाक्टर साहब रहते थे। वह मरीजों का इलाज करते थे। उनके यहाँ एक मरीज आया। उन्होंने उससे कहा कि लेट जाओ। और इंजेक्शन लगा दिया। जब मरीज ने पूछा कि डाक्टर साहब मेरे इंजेक्शन क्यों लगाया। तो डाक्टर साहब ने कहा तुम्हें परसों बुखार आ रहा था। इसलिए मैंने इंजेक्शन लगाया। तो मरीज ने कहा कि मैं तो मेरी बहन की शादी का बुलावा देने आया था। तो आपने इंजेक्शन लगा दिया। तभी मरीज का बेटा आ गया। तो मरीज ने पूछा कि मेरे बेटे के इंजेक्शन क्यों लगाया। डाक्टर साहब बोले कि यहाँ जो भी आता है मैं उसे इंजेक्शन लगाता हूँ।

● चित्र व कथा : सरिता कुँवर, लसूड़िया राठौर, मंदसौर, म.प्र.

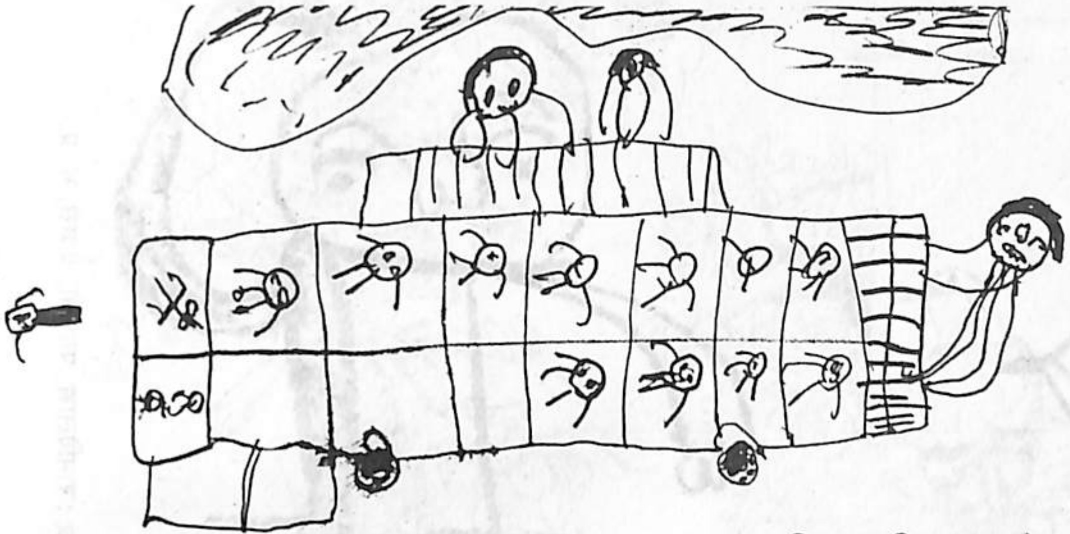
क्रिकेट

बंदर मामा गए खेलने
चौके छक्के लगे पेलने
भालू दादा थे बेहाल
फेंक रहे थे स्पिन बॉल
बल्ला लेकर चीता आया
पाँच मिनिट में शतक बनाया
बल्ला लेकर आया शेर
रन लेने में हो गई देर
जोर से फिर सब चीखे सारे
रन आउट हो गए बिचारे
क्रोध में आकर शेर दहाड़ा
जंगल का सारा खेल बिगाड़ा

● रुकमणी यादव, सातवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.



● चित्र : रुकमणी यादव, सातवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

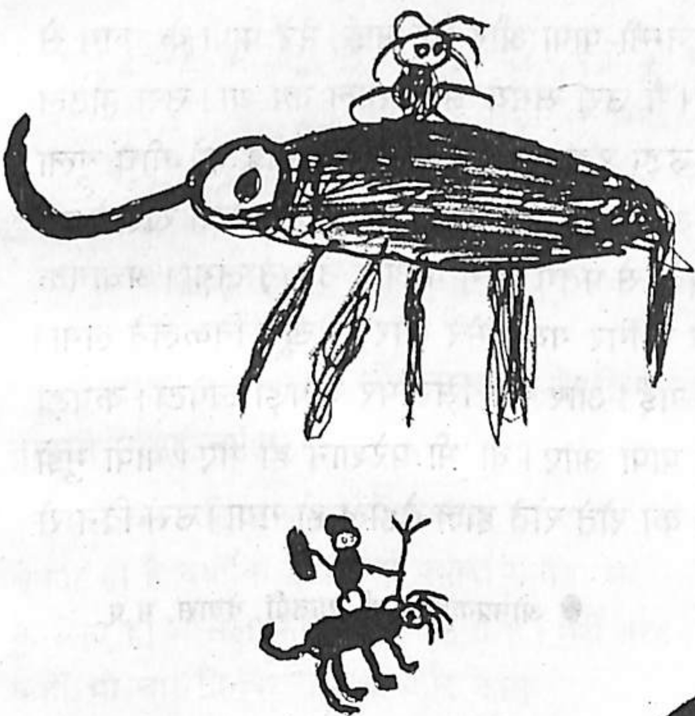


● चित्र : लक्ष्मी नारायण, तीसरी, हरणगाँव, देवास, म. प्र.

एक दिन की बात है...

एक दिन की बात है कि मेरी सहेली की नानीजी छत पर सो रही थीं। गरमी का मौसम था। लाइट नहीं थी। वो चारपाई पर सो रही थीं। कि मच्छर काटा। और नानीजी इधर उधर हुईं। नीचे गिर गईं। सुबह सब लोग उठकर देखे। नानीजी मर गईं। फिर सब लोग रोने लगे। फिर उनको एक सफेद कपड़े में लपेट दिया। और एक बगीचे में एक जगह गड्ढा खोदा। और नानीजी को उसी गड्ढे में डाल दिया गया।

● नीरव जोशी, तीसरी, दर्शन नगर, फैज़ाबाद, उ.प्र.

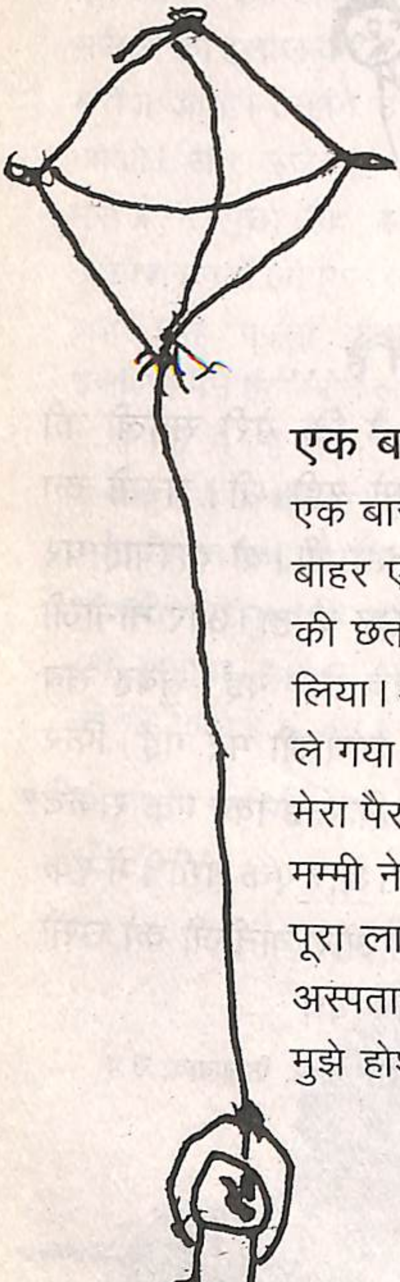




● चित्र : राजेश कुमार, देवास, म. प्र.



● चित्र : रामविलास, पटरानी, देवास, म.प्र.



एक बार की बात...

एक बार की बात है। मैं, मेरे मम्मी-पापा और मेरे भाई, मेरे पापा के काम से बाहर एक होटल में रुके थे। मैं उस समय आठ साल का था। उस होटल की छत पर मेरा भाई पतंग उड़ा रहा था। मम्मी ने मेरे भाई को नीचे बुला लिया। और मैं भी नीचे चला आया। दूसरे दिन मेरे भाई को दोस्त खेलने को ले गया। तब मैंने मम्मी से चुपके से पतंग ले गया और उड़ाने लगा। अचानक मेरा पैर फिसला और मैं छत पे गिर गया। मेरे सिर से खून निकलने लगा। मम्मी ने देखा तो परेशान हो गईं। और मेरे सिर पर कपड़ा लपेटा। कपड़ा पूरा लाल हो गया। तब मेरे पापा आए। वो भी परेशान हो गए। पापा मुझे अस्पताल ले गए। मम्मी पापा का रोते रोते हाल बेहाल हो गया। उस दिन से मुझे होश आया।

● ओमप्रकाश वर्मा, सातवीं, देवास, म.प्र.



● चित्र : अकबर खान, देवास, म. प्र.

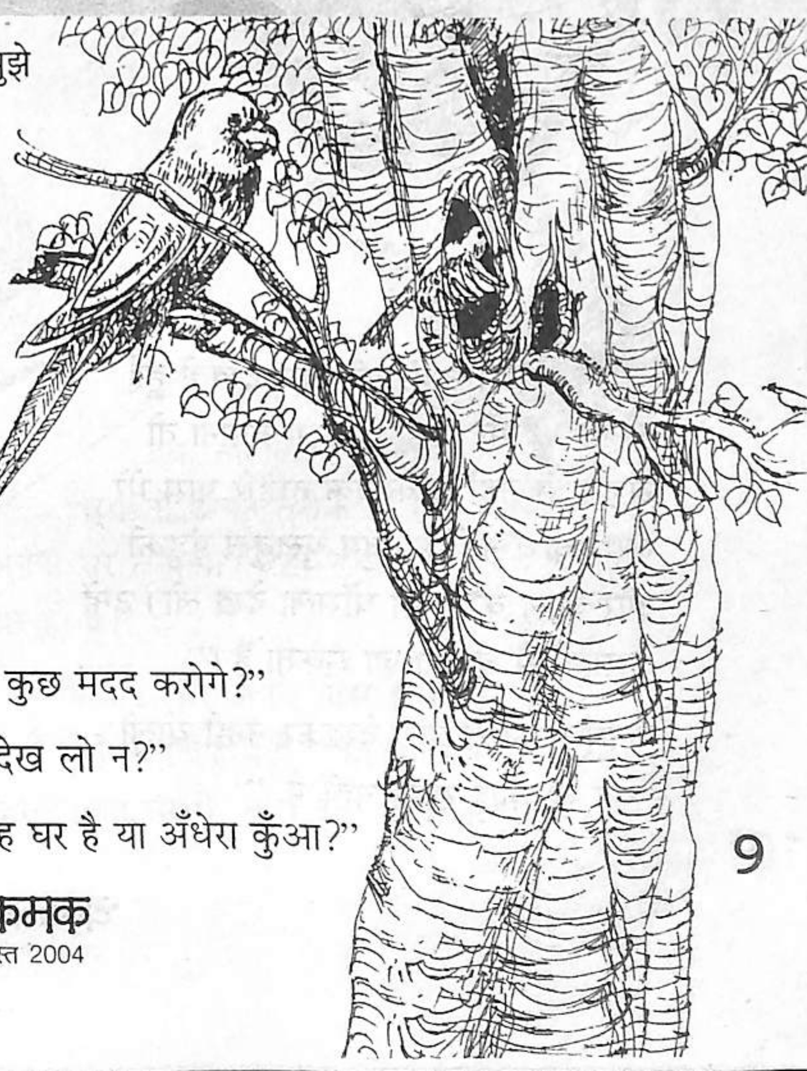


सबसे प्यारा घर

नन्ही गौरैया को पहली बार अपना घोंसला बनाना था। वैसे तो माँ से उसने घोंसला बनाना सीख लिया था, लेकिन अपने प्यारे नन्हे मुन्नों के लिए वह सबसे अलग और प्यारा घर बनाना चाहती थी। इसके लिए उसे पहले अपने साथियों के घोंसले देख लेना ज़रूरी लगा। सबसे पहले वह गुटकू कबूतर से मिली।

"गुट्कू दादा! एक बढ़िया घोंसला बनाने के लिए मुझे तुम्हारी सलाह चाहिए।"

"घोंसले को बढ़िया बनाने में मेहनत करना तो बेकार ही है क्योंकि ज़्यादा से ज़्यादा महीना भर के लिए ही घोंसले की ज़रूरत रहती है। मेरी तरह कहीं भी चार तिनके जमाओ और काम चलाओ।"



"यह भी कोई बात हुई?" नन्ही ने सोचा और बिना कुछ कहे वहाँ से चली गई। रास्ते में मिट्ठूमामा से मुलाकात हुई।

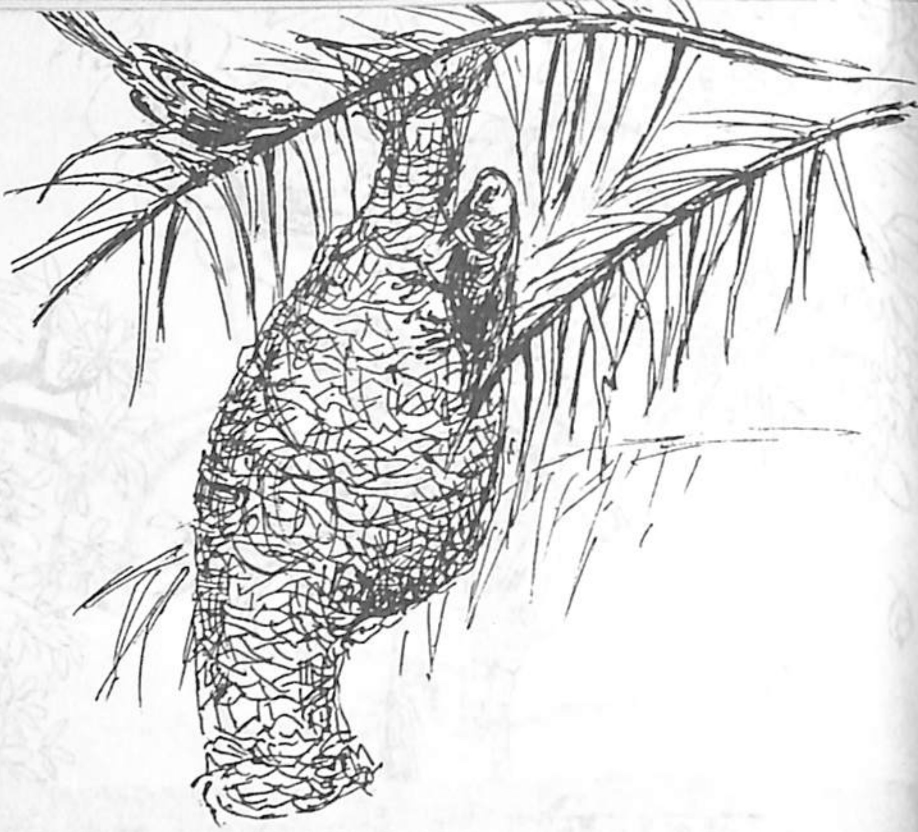
"मिट्ठू मामा मुझे एक शानदार घर बनाना है। मेरी कुछ मदद करोगे?"

"बनाती क्यों हो? मेरी तरह किसी पेड़ का कोटर देख लो न?"

"बाप रे" – नन्ही ने कोटर में झाँककर देखा – "यह घर है या अँधेरा कुँआ?"

इसके बाद नन्ही बया से मिली। बया बोली - "मेरा घोंसला बेशक शानदार है, लेकिन यह तो तुम्हारे लिए बड़ा मुश्किल होगा नन्ही।"

"वैसे भी इसमें खिड़कियाँ तो हैं ही नहीं" - नन्ही ने मन ही मन कहा और वह दर्जिन के पास पहुँची।



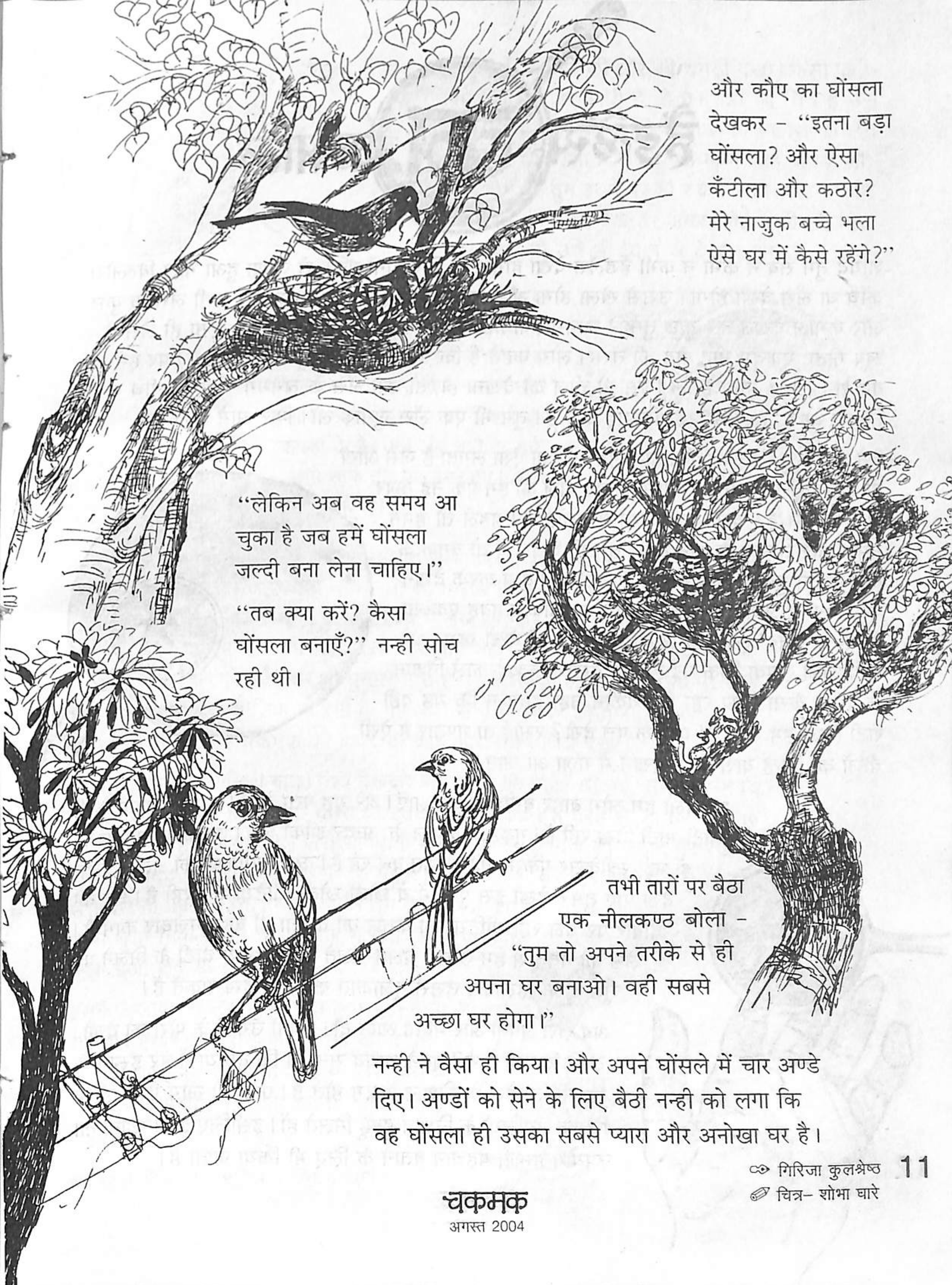


दर्जिन उस समय घास के मज़बूत रेशों से पत्तों को सिलकर घोंसला बना रही थी। सुई का काम अपनी लम्बी नुकीली चोंच से ले रही थी।



दर्जिन गर्व से नन्ही की ओर देखती हुई बोली - "मेरे जैसा घोंसला बनाना तो संभव ही नहीं है क्योंकि तुम्हारे पास मेरे जैसी चोंच नहीं है। तुम बुलबुल पंडुकी और कालू कौए का घोंसला देख लो। उन्हें आसानी से बनाया जा सकता है।"

बुलबुल का घोंसला देखकर नन्ही बोली - "यह तो कोई खास नहीं है।"



और कौए का घोंसला देखकर – "इतना बड़ा घोंसला? और ऐसा कँटीला और कठोर? मेरे नाज़ुक बच्चे भला ऐसे घर में कैसे रहेंगे?"

"लेकिन अब वह समय आ चुका है जब हमें घोंसला जल्दी बना लेना चाहिए।"

"तब क्या करें? कैसा घोंसला बनाएँ?" नन्ही सोच रही थी।

तभी तारों पर बैठा एक नीलकण्ठ बोला – "तुम तो अपने तरीके से ही अपना घर बनाओ। वही सबसे अच्छा घर होगा।"

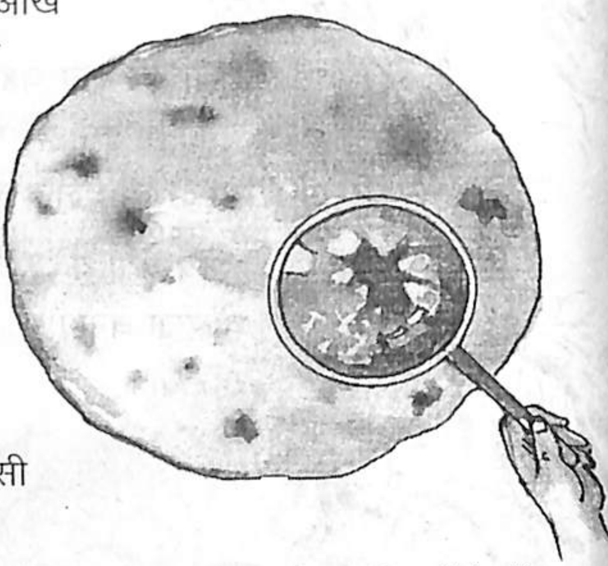
नन्ही ने वैसा ही किया। और अपने घोंसले में चार अण्डे दिए। अण्डों को सेने के लिए बैठी नन्ही को लगा कि वह घोंसला ही उसका सबसे प्यारा और अनोखा घर है।

गिरिजा कुलश्रेष्ठ
चित्र– शोभा घारे

हैंडलेंस का कमाल

शायद तुम सब ने कभी न कभी हैंडलेंस देखा होगा। या फिर दोनों तरफ से उभरा हुआ गोल बिल्लोरी काँच या लेंस देखा होगा। उससे खेला होगा और खूब मज़े किए होंगे। तो इस बार उसी लेंस के कुछ और कमाल देखते हैं - कुछ तुम्हारे जाने-पहचाने और कुछ नए भी। हमारे पास एक ऐसा ही लेंस है - खूब मोटा, एकदम मोटू सेठ की तरह। लोग कहते हैं कि उसकी फोकल दूरी 5 से.मी. है। पर हमें तो बस यह समझ आता है कि जिस भी चीज़ को देखना हो, तो उसे लेंस के लगभग 4 अंगुल नीचे रखो तो हर चीज़ खूब बड़ी-बड़ी दिखाई देती है। तुम भी एक लेंस जुगाड़ लो। फिर आगे बढ़ते हैं।

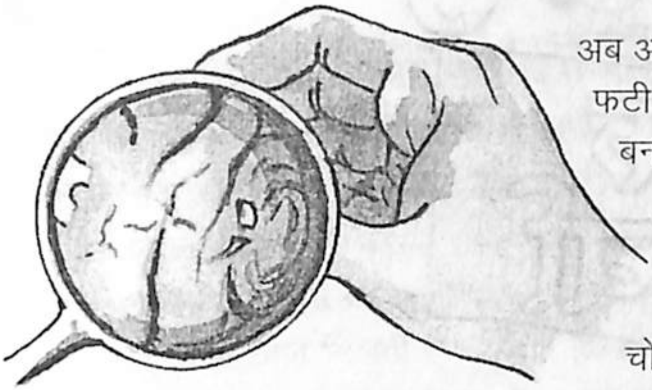
वैसे इस तरह की कोई चीज़ हाथ लग जाए तो ऐसा लगता है जैसे आँखें ही खुल गई हों! अपने आसपास की हर चीज़ को हम एक नई नज़र से देख पाते हैं। चलो शुरू करते हैं रसोई से। पहले तो हमने नमक और शक्कर के दाने देखे। तुम भी देखो। यूँ तो नमक के दाने कितने भुरभुरे-से दिखते हैं। पर लेंस से बड़ा करके देखने पर समझ में आता है कि हरेक दाने का आकार हूबहू एक-सा है। है न गज़ब! अब एक सिकी हुई रोटी को देखो ज़रा। अरे जहाँ थोड़ी ज़्यादा सिक गई है, वहाँ देखो - क़त्थई-काले निशान के पास। कैसा दिख रहा है? यकीन नहीं होता न कि यह वही रोटी है जो हम खाते हैं! चाय के पत्ते देखे? रसोई तो भण्डार है ऐसी चीज़ों का जिन्हें बारीकी से देखने में मज़ा आ जाए।



पर चलो हम लोग बाहर बगीचे में घूम आएँ। अरे यह पत्ता देखो। इसकी शिराएँ कैसी मोटी-मोटी दिख रही हैं। गुड़हल के फूल के अन्दर झाँको ज़रा। उसकी फुनगी देखो। हाँ भई, स्त्रीकेसर-पुंकेसर की ही बात कर रहे हैं। क्या परागकणों को अलग-अलग देख पाए तुम? देखो इस फूल में ये छोटी-छोटी चींटियाँ घूम रही हैं। घर की दीवार पर चल रही चींटियों की कतार को देखना भी बहुत मज़ेदार काम है। लेंस की मदद से हम उनको चलते-चलते किसी दूसरी चींटी के मिलने पर सूँड हिला-हिलाकर उससे मुलाकात करते भी देख सकते हैं।



अब ज़रा अपनी ओर भी तो ध्यान दो। अपनी उँगली के पोरों को देखो। कैसी दिखती हैं ये? तुमने शायद सुना हो कि दुनिया में हर इंसान के उँगली के पोरों के निशान अलग होते हैं। कोई दो लोग ऐसे नहीं हैं जिनके उँगलियों के निशान हूबहू मिलते हों। इसीलिए इन निशानों का उपयोग हमारी पहचान बताने के लिए भी किया जाता है।



अब अपनी हथेली के पीछे की ओर की चमड़ी देखो। कैसी फटी-फटी दरारों वाली नज़र आती है, है न। यहाँ जो चित्र है उसे बनाने के लिए हमने अपने अँगूठे के पीछे की लकीरों को लेंस में से देखा था। ऐसा दिख रहा था मानो कोई पहाड़ी और घाटी हो!! पर तुम इतने पर ही रुकना नहीं। अपने शरीर के विभिन्न अंगों को देखना। अगर कोई फुंसी हो जाए, चोट लग जाए तो उसे भी ध्यान से देखना ज़रूर!



चलो कुछ और चीज़ें देखते हैं। एक कागज़ का टुकड़ा दोनों हाथों से खींचकर ऐसे फाड़ो कि उसके रेशे दिखने लगें। और फिर उसे देखो। क्या दिखा? अब ज़रा अपनी शर्ट का कपड़ा देखो। ताने और बाने के सभी धागे साफ तौर पर उभरे हुए दिखते हैं, है न।



अच्छा अब चकमक के इसी अंक के साथ आए कैलेण्डर का पन्ना देखो। इसमें हमने दो रंगों का उपयोग किया है। जहाँ-जहाँ दोनों रंगों का मिश्रण दिख रहा हो, वहाँ देखने पर तुम्हें दोनों रंगों के बिन्दु दिखाई देंगे। इस पूरे चित्र में लेंस लगाकर देखने पर तुम्हें दिखाई देगा कि कैसे कहीं पर एक रंग कम है तो दूसरा ज़्यादा। कहीं-कहीं दोनों रंग अकेले-अकेले भी हैं। क्या पहले के सारे कैलेण्डर भी तुम्हारे पास हैं? उन सबको लेंस में से देखने पर तुम्हें समझ आएगा कि कैसे सिर्फ दो रंगों के मेलजोल से ये कैलेण्डर छपते रहे हैं। अब रंगीन छपाई देखने के लिए चकमक का कवर या कोई और रंगीन चित्र देखो।

चलते-चलते एक आखिरी बात। चित्र देखकर समझ गए कि नहीं? हाँ भई, सूरज की मदद से कागज़ जलाना। हमारे कुछ दोस्त तो इतने माहिर हैं कि इस तरह से कागज़ पर नाम भी लिख लेते हैं! पर यह खेल ज़रा सावधानी से ही खेलना। कागज़ को ज़मीन पर रखकर लेंस की मदद से सूरज की किरणें उस पर केन्द्रित करना। फिर खूब सारे धीरज के साथ उसे वैसे ही पकड़े रहना। थोड़ी देर में तुम देखोगे कि कागज़ में से धुआँ निकल रहा है। कागज़ में उस जगह पर एक जला हुआ छेद भी बन जाएगा।



इसके अलावा भी लेंस में से क्या कुछ नहीं देखा जा सकता। हमारे आसपास की दुनिया को देखने का मज़ा ही कुछ और हो जाता है, अगर लेंस पास हो तो। तुम इसकी मदद से अपनी खोजें जारी रखना।

■टुलटुल विश्वास ■चित्र : विवेक वर्मा



मुलाकात पाँच मज़ेदार किताबों से

मज़ेदार कहानियाँ, एक अलग नज़रिया, और खूब सारे रोचक चित्र ऐसी हैं ये पुस्तकें जो भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने छापी हैं। और हैं भी ये बहुत सस्ती! चित्र रंगीन नहीं हैं पर इनमें आसानी से अपनी मर्ज़ी के रंग भरकर इन्हें रंगीन बना सकते हो। इस प्रकाशन ने इस तरह की करीब साठ सत्तर किताबें छापी हैं। हम यहाँ उनमें से पाँच किताबों की समीक्षा दे रहे हैं।



व्हील-चेयर ही मेरे पैर हैं...

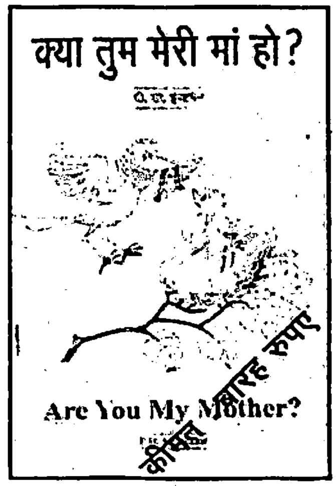
यह कहानी एनेग्रेट रिट्टर और फ्राँज़ जोज़फ हुआनिश द्वारा लिखी गई है। यह एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसके पैर काम नहीं करते। कई बार ऐसे व्यक्तियों को लोग अपाहिज और अपंग कहते हैं। उन्हें बेचारगी की नज़र से देखते हैं। पर मारजिट नाम की यह लड़की खुद काफी कुछ कर सकती है और करना चाहती भी है। उसे सिजी नाम का एक लड़का मिलता है जिसके बाल लाल रंग के हैं। इस वजह से सभी उसे अलग-सा मानते हैं और घूरते हैं। इन दोनों की दोस्ती हो जाती है। उन्हें लोगों का यह नज़रिया न तो समझ में आता है, न ही अच्छा लगता है। मारजिट कहती है... ''पता नहीं क्यों लोग हमें अलग मानते हैं।'' सिजी कहता है... ''चूँकि हम अलग हैं। तुम्हारी व्हील चेयर है और मेरे बाल लाल हैं। हम दोनों खास हैं।'' और फिर वे दोनों निकल जाते हैं। मस्ती के अन्दाज़ में। फिर तो सबको दुबारा सोचना पड़ता है। पुस्तक पढ़ोगे तो एक फर्क नज़रिया मिलेगा।

दानी पेड़...

'दानी पेड़ शेल' सिल्क्रस्टीन की पुस्तक 'द गिविंग ट्री' पर आधारित है। अरविन्द गुप्ता द्वारा लिखी गई यह किताब इन्सान और पेड़ के बीच जीवन भर के रिश्ते को उजागर करती है। कैसे एक पेड़ हमेशा इन्सान को देता ही रहता है। यह एक पेड़ की मार्मिक कहानी है।



क्या तुम मेरी माँ हो...



यह कहानी है अंडे से हाल में निकले चिड़िया के एक बच्चे की। जब बच्चा अंडे में से निकलता है तब उसे उसकी माँ वहाँ नज़र नहीं आती। वह अपनी माँ को ढूँढने निकल पड़ता है। उसके सामने यह समस्या है कि वह अपनी माँ को कैसे ढूँढे, जबकि उसने माँ को कभी देखा भी नहीं है। समस्या तब बढ़ जाती है जब उसे कई और चीज़ें मिलती हैं - कुत्ता, बिल्ली, मुर्गी, ट्रक, ऐरोप्लेन और भी कई चीज़ें। उन सबसे चूज़ा पूछता है - क्या तुम मेरी माँ हो? चूज़े को अपनी माँ कैसे मिलती है, यह जानने के लिए तुम्हें यह किताब पढ़नी पड़ेगी। इस पुस्तक में कहानी हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों में है। तो अंग्रेज़ी सीखने का मौका भी मिलेगा।



बिल्लियों की बारात...

घर में बिल्ली पालना कई लोगों को बहुत पसन्द होता है, शायद तुम्हें भी हो। वैण्डा गैग की यह कहानी एक बूढ़ी और बूढ़े की है जो एक बिल्ली पालना चाहते हैं। जब बूढ़ा बिल्ली ढूँढने निकलता है तो उसे लाखों बिल्लियाँ मिल जाती हैं। इन हज़ारों लाखों बिल्लियों के साथ क्या–क्या होता है। और अंत में कैसे तय होता है कि बूढ़ा और बूढ़ी कौन सी बिल्ली पालेंगे – यह सब पता चलेगा पुस्तक पढ़ने से। पुस्तक के चित्र भी वैण्डा ने ही बनाए हैं जो बहुत ही रोचक हैं। इस पुस्तक में हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषा में कहानी दी है। हिन्दी अनुवाद कहीं-कहीं पर इतना सही नहीं बैठता।

ऊँची उड़ान...



चौंतीस पन्नों की यह कहानी केवल चित्रों के माध्यम से कही गई है। तुम इन चित्रों का मज़ा लूटना। इसमें एक लड़की विभिन्न तरीकों से उड़ने की कल्पना को साकार करने की कोशिश करती है। इस दौरान उसके साथ कई रोमांचक घटनाएँ होती हैं। जैसे एक बार वह टी. वी. के एन्टीना में फँस जाती है। अपने मन से कहानी गढ़ने की कोशिश भी करना। वैसे किताब के शुरू में छोटे अक्षरों में कहानी संक्षेप में दी गई है। पर तुम इसे पहले मत पढ़ना! नहीं तो मज़ा किरकिरा हो जाएगा। अच्छा होता कि यह संक्षेप पुस्तक में होता ही नहीं।

• समीक्षा : अंजली नरोना

इन किताबों को मँगाने के लिए तुम इस पते पर लिख सकते हो ...
भारत ज्ञान विज्ञान समिति, वेस्ट ब्लॉक– 2, विंग 6,
आर. के. पुरम, सेक्टर 1, नई दिल्ली –66



साही

बड़े मज़े का दिन शनिवार
इस दिन मिलती खरची यार
(वैसे मुझको यह है पता
खरची तभी मिलेगी जब
हो न मुझसे कोई खफ़ा)



मम्मी-पापा से इस हफ्ते जब कहा गया
आपकी बिटिया खरी है बिल्कुल सोनेसी
तब मेरे अच्छु पापा ने मुझको भैय्या
नाश्ते के बाद दे डाले पाँच रुपैया
झट से पहुँची उस दुकान पे
जहाँ मिठाई रखी थी बनके
लेकर सेर मिठाई जल्दी
मैं इक अपने ठिए पे चल दी

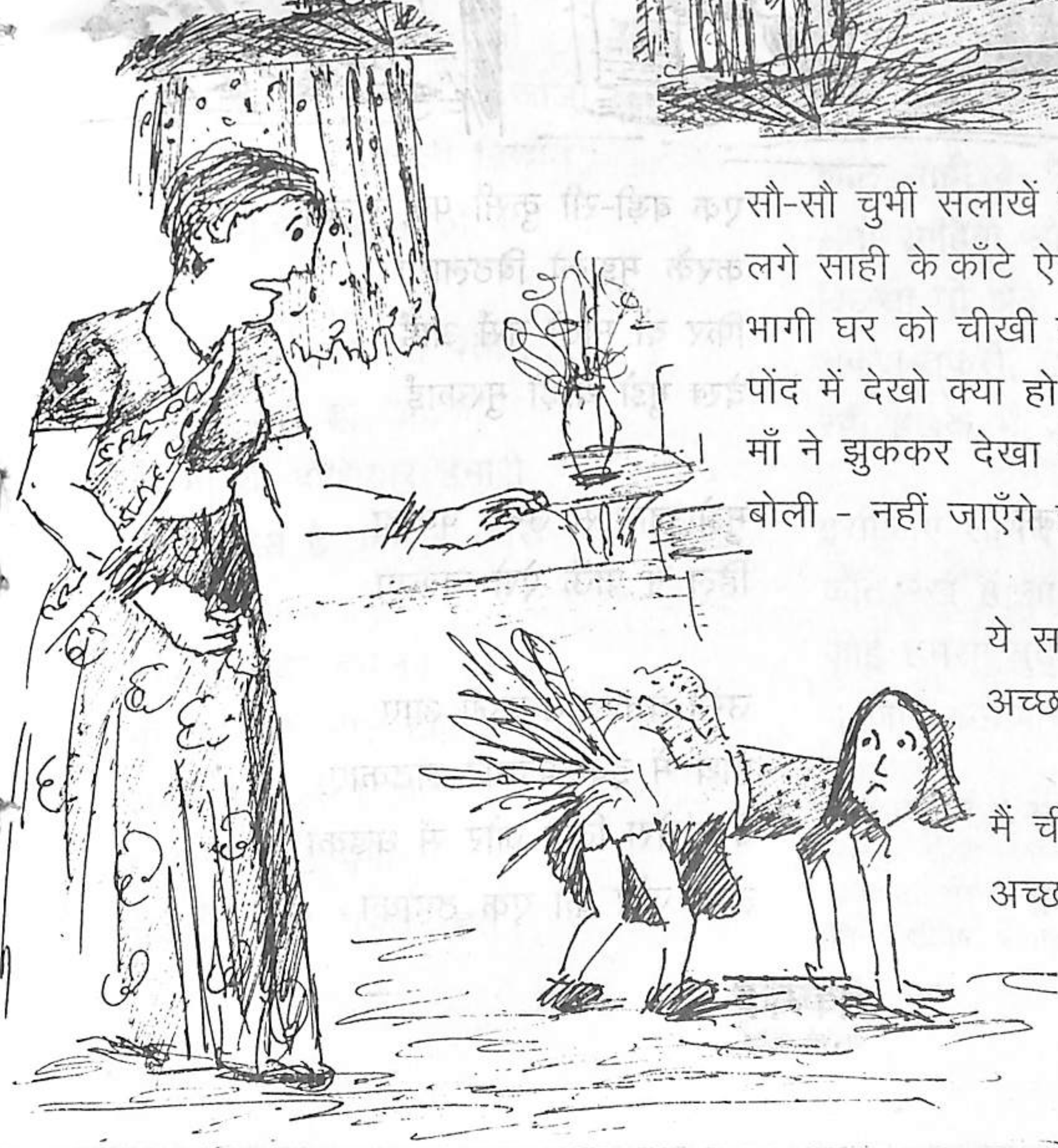
वहीं जहाँ अकसर जाती हूँ
वहीं जहाँ छुपकर जाती हूँ
पेड़ों, चट्टानों के पीछे
एक ठिया जो मुझको खींचे



मिला मुझे एक बढ़िया टीला
साफ सुथरा, गोल मटीला
उस पे बैठ मज़ा आएगा
सचमुच मुझको बड़ा भाएगा

सोचा बैठ मज़े से दिनभर
बर्फी खालूँ पूरी जी भर
ज्यों ही बैठी, चीखी! उछली!!
सीट मुलायम, साही निकली
काँटे चुभे पोंद में ऐसे
आग लगी हो उनमें जैसे

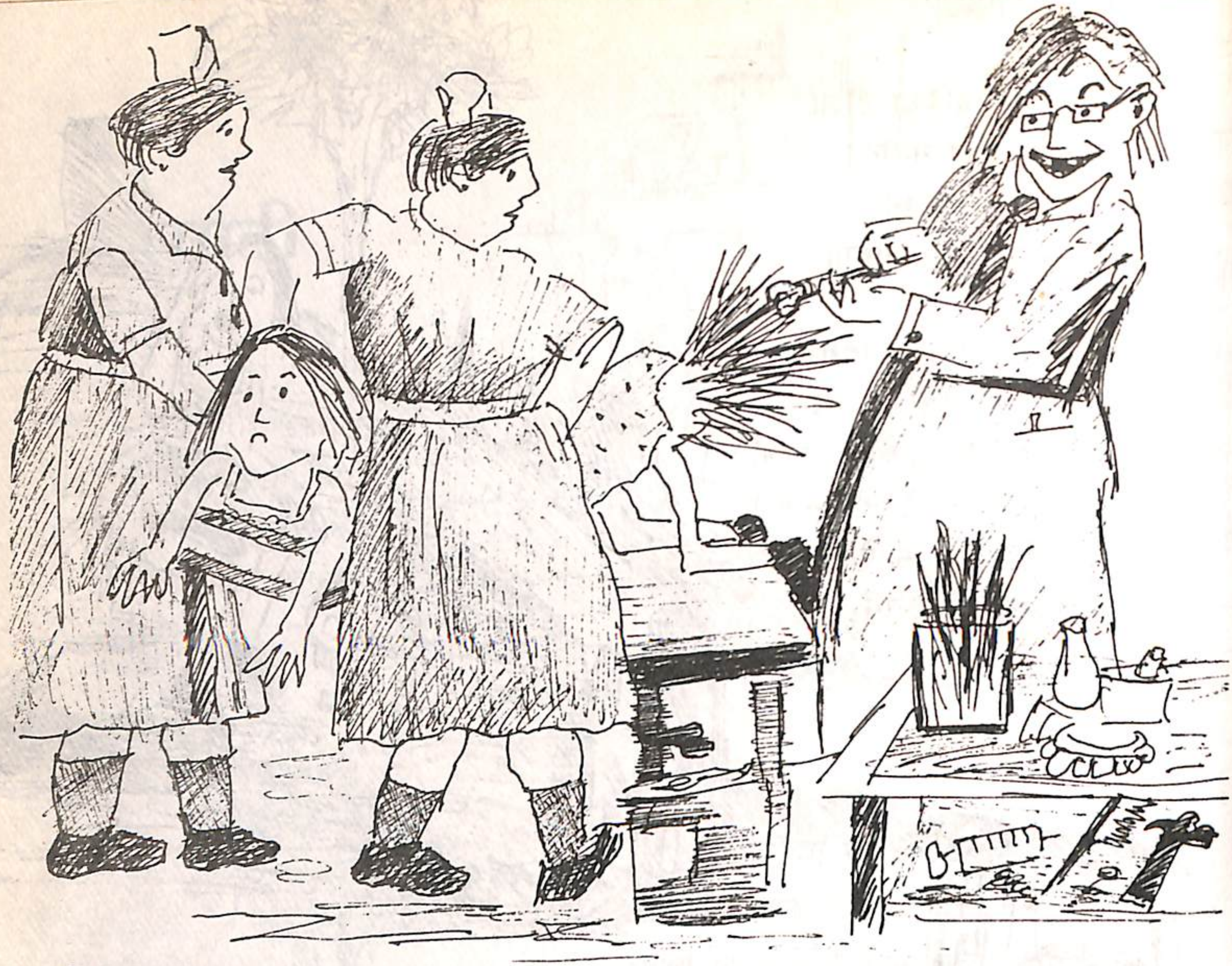




सौ-सौ चुभीं सलाखें जैसे
लगे साही के काँटे ऐसे
भागी घर को चीखी माँ ऽ ऽ ऽ
पोंद में देखो क्या हो गयाऽ ऽ ऽ
माँ ने झुककर देखा पीछे
बोली - नहीं जाएँगे खींचे

ये साही के काँटे अटके
अच्छा हो कोई डॉक्टर झटके

मैं चीखी! वो दाँतों का डॉक्टर?
अच्छा हो तुम ही खींचो गर



कीं मिन्नतें कितनी बार
सभी दलीलें गईं बेकार
बड़े कहाँ बच्चों की सुनते
जो हो मर्ज़ी वो ही चुनते

माँ बोली बस डॉक्टर झटका
ही आएँगे काम
ऐसी चीज़ें खींचा करते
जो सुबह से शाम

थोड़ी देर में खुदको मैंने
झटका के क्लीनिक में पाया

एक बड़ी-सी कुर्सी पर, उल्टा
करके मुझको बिठलाया
फिर दो मोटी नर्सें आईं
देख मुझे थोड़ी मुस्काईं

मुझे ज़ोर से उनने पकड़ा
हिल न पाऊँ ऐसे जकड़ा

उसी वक्त झटकाजी आए
हाथ में इक प्लायर लटकाए
देख मेरा दिल ज़ोर से धड़का
लगा ज़ोर का एक ठहाका

बोले, ऐसा पहली बार हुआ है
अनुभव मेरे लिए नया है
ओहो.. शरीर के इस हिस्से से
खींचा नहीं कभी कुछ भी कसम से

खींचे काँटे एक-एक करके
कैसा मज़ा है! वे चिल्लाते
काँटे खिंचते रहे हमारे
दिन में दिखते रहे सितारे
कोई बचाओ! मैं चिल्लाती
चिल्लाती और शोर मचाती

कहते थे वो यही हर बार
बचा है बस इक काँटा यार
आसमान सिर पे न उठाओ
बस थोड़ा और... चुप हो जाओ
काम से ज्यों ही मिली निजात
झटका ने की फीस की बात

जी हाँ बस इक हरा पत्ता....
झट से बोले डॉ. झटका
माँ भी थी होशियार हमारी
बोली फीस है काम से भारी

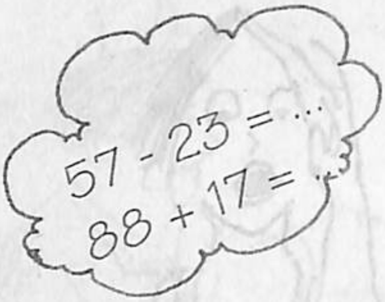
डॉक्टर तेवर बदलके बोले
माँ से, धीरे, हौले-हौले
अगर नहीं खींचे होते
ये सारे काँटे मैंने
चड्डी में ही चुभते रहते



काँटे साही के पैने
सुनो साहिबो और साहिबान
किस्सा तो अब हुआ तमाम
अफरा-तफरी, मारा मारी
रही हलक में जान हमारी

इसीलिए शायद साही ने
काँटे रखे हैं ताने
कोई हमसा बुद्धू, बैठे
न जाने अनजाने

डर्टी बीस्ट्स से साभार
लेखकः रोल्ड डाह्ल,
अनुवादः सुशील शुक्ल एवं शशि सबलोक
चित्रः संतोष श्रीवास्तव



संख्याओं के खेल



दनदनाते हुए एक साँस में एक से सौ तक की गिनती तुमने जाने कितनी बार बोली होगी। हमने भी गिनती बोल-बोलकर गणित समझ आने की बात पर गर्व किया है। पर गिनती को इस तरह बोलने के अलावा और किया भी क्या जा सकता था। सो जल्द ही ऊब जाते। लेकिन एक दिन 100 तक की गिनती चार्ट को ध्यान से जो देखा तो अचरज में रह गए। उसमें क्या तो मज़ेदार बातें छिपी थीं। कुछ हमने खोज ली हैं, कुछ मिलकर खोजते हैं।

संख्या ढूँढो

चार्ट में से कोई एक संख्या चुन लो। अब देखो कि चुनी गई संख्या से 9 कम संख्या कहाँ है? इसी तरह चुनी हुई संख्या से 11 अधिक संख्या कहाँ है? क्या इसमें कोई पैटर्न नज़र आया? संख्या बदलते जाओ और खेल बढ़ाते जाओ।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
41	42	43	44	45	46	47	48	49	50
51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70
71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
81	82	83	84	85	86	87	88	89	90
91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

अंतर ढूँढो

चार्ट में कोई भी संख्या चुन लो।

मैंने 23 चुनी। इससे ठीक ऊपर वाली संख्या देखो।

◆यह चुनी हुई संख्या से कम है या ज़्यादा?

◆दोनों में कितना अंतर है?

अब कोई दूसरी संख्या जैसे 56 लो। इससे ठीक ऊपर वाली संख्या को देखो।

■दोनों में कितना अंतर है?

■क्या यह अंतर 23 और उससे ऊपर वाली संख्या के अंतर के बराबर है?

अब दोनों संख्याओं के चारों ओर की संख्याओं को देखो। क्या नीचे और ऊपर की संख्याओं से भी दोनों संख्याओं का अंतर बराबर है? यानी,



23–13

33–23

56–46

66–56



➤➤क्या इन सबके अंतर बराबर हैं?

➤➤अब बताओ कि इन संख्याओं से दाएँ या बाएँ चलने पर कितना अंतर आता है?

➤➤क्या चार्ट की सभी संख्याओं में यही पैटर्न दिखाई देता है?

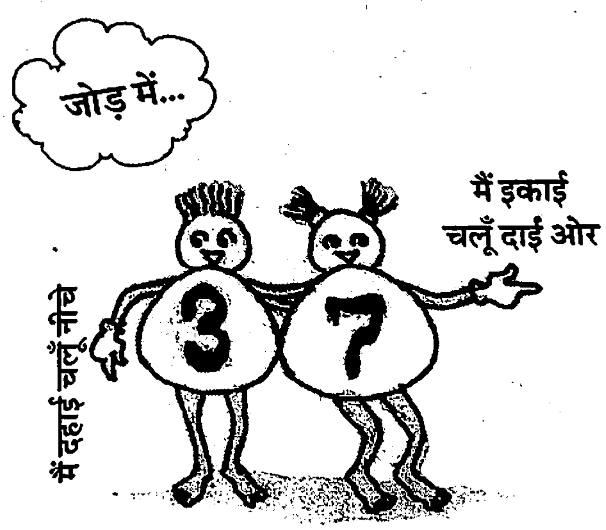
जोड़-घटा

चार्ट से जोड़ना-घटाना बेहद मज़ेदार है। मान लो तुम्हें 23 में 37 जोड़ने हैं। तो सबसे पहले तुम पहली संख्या यानी 23 पर एक बटन रख लो।

फिर दूसरी संख्या यानी 37 की इकाई वाली संख्या देखो। इकाई में 7 है। तो तुम 23 से शुरू करके उसकी दाईं ओर 7 खाने चलोगे। इस तरह तुम पहुँचोगे 30 पर। अब बटन को यहाँ रख दो।



37 की दहाई वाली संख्या देखो। दहाई में 3 है। तो तुम्हें 30 से तीन संख्या नीचे जाना है। यहीं तुम्हें उत्तर मिलेगा। 60 सही जवाब है।

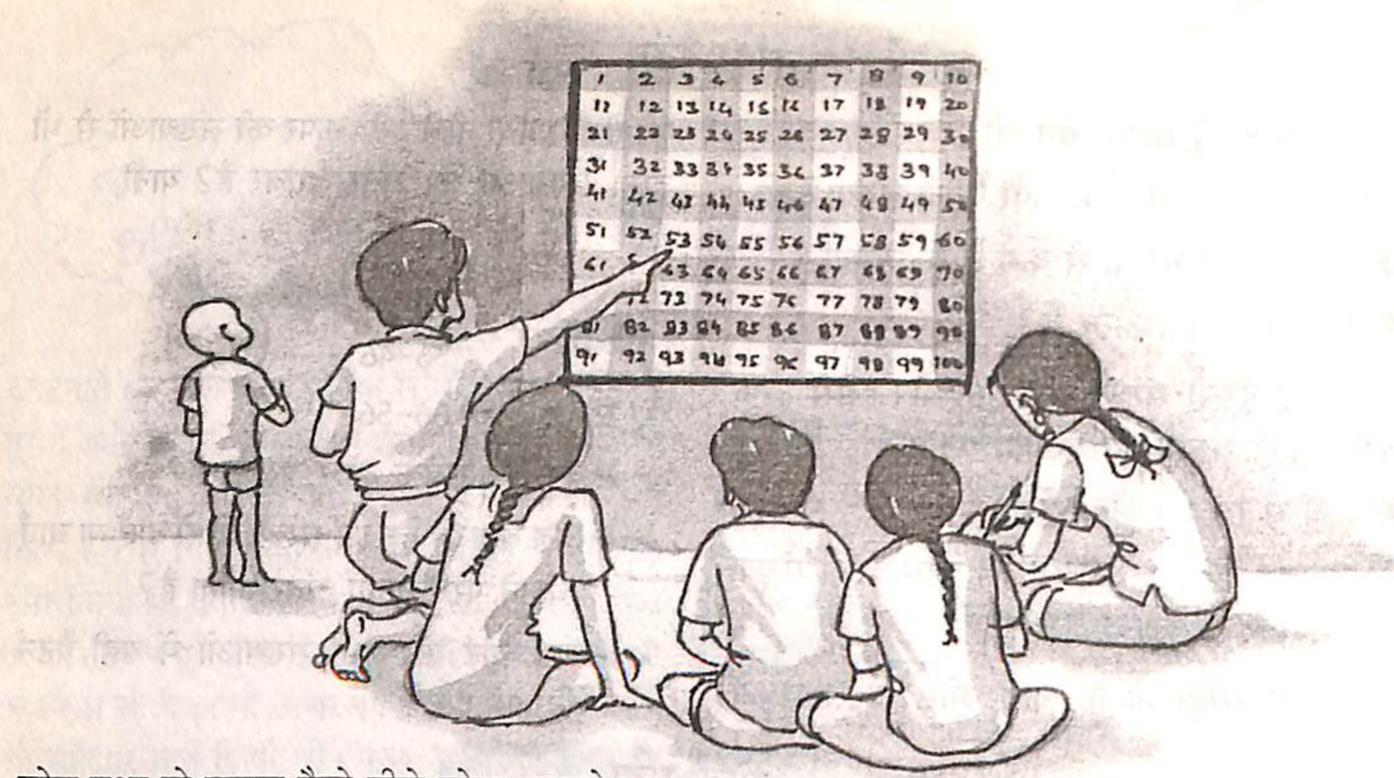


अच्छा एक बात बताओ। क्या इकाई के लिए दाईं ओर और दहाई के लिए नीचे की ओर चलने का कारण समझ पाए। थोड़ी सी मदद करें। किसी भी संख्या का उसकी दाईं ओर की संख्या से और नीचे की संख्या से अंतर पर ध्यान दो।

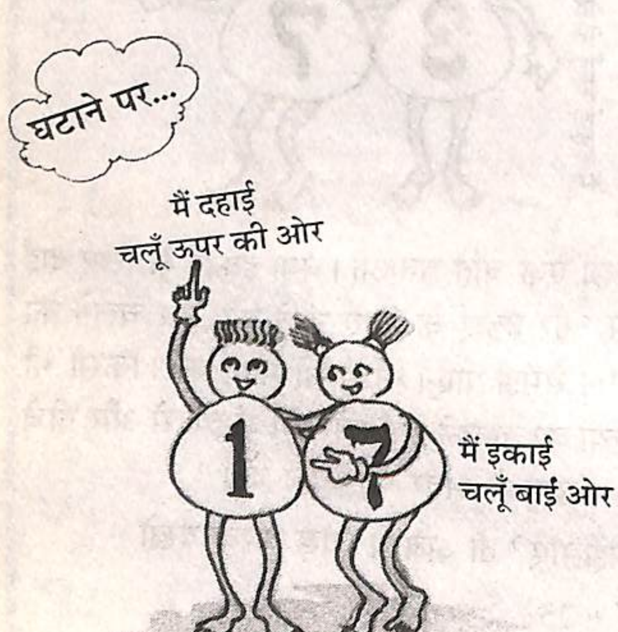
समझ गए? तो अब ये जोड़ करके देखो –

46 + 25

71 + 18



जोड़ हुआ तो घटाना कैसे पीछे रहेगा। घटाने का तरीका जोड़ के एकदम उलट है। यहाँ इकाई की संख्या के बराबर खाने बाईं ओर चलो और दहाई की संख्या जितना ऊपर की ओर चलो। जैसे अगर 35 - 14 करना है, तो सबसे पहले 35 पर एक बटन रख लो। फिर दूसरी संख्या 14 के इकाई व दहाई पर ध्यान दो। इकाई में 4 है इसलिए 35 से 4 संख्या बाईं ओर चलो। तुम पहुँचोगे 31 पर। दहाई में 1 है इसलिए 31 से एक संख्या ऊपर की ओर चलो। इस तरह तुम 21 तक पहुँचोगे। एकदम सही जवाब।



यह घटाना तो मुश्किल न रहा। लेकिन अगर 35-17 करना हुआ तो कुछ मुश्किल ज़रूर होगी। क्योंकि 35 की बाईं ओर तो केवल 4 संख्याएँ हैं जबकि हमें तो 7 खाने चलना है। ऐसे में तुम 35 के बाईं ओर 4 संख्याएँ चलो और उसके ऊपर वाली लाइन के दाहिने छोर से आगे बढ़ते हुए 3 संख्याएँ और बढ़ो। यानी 34, 33, 32, 31, 30, 29 से होते हुए तुम 28 तक पहुँचोगे। अब दूसरी संख्या की दहाई में 1 है तो 28 से एक संख्या ऊपर की ओर चलो। यहीं मिलेगा तुम्हें तुम्हारा सही उत्तर।

कुछ सवाल करके देखो।

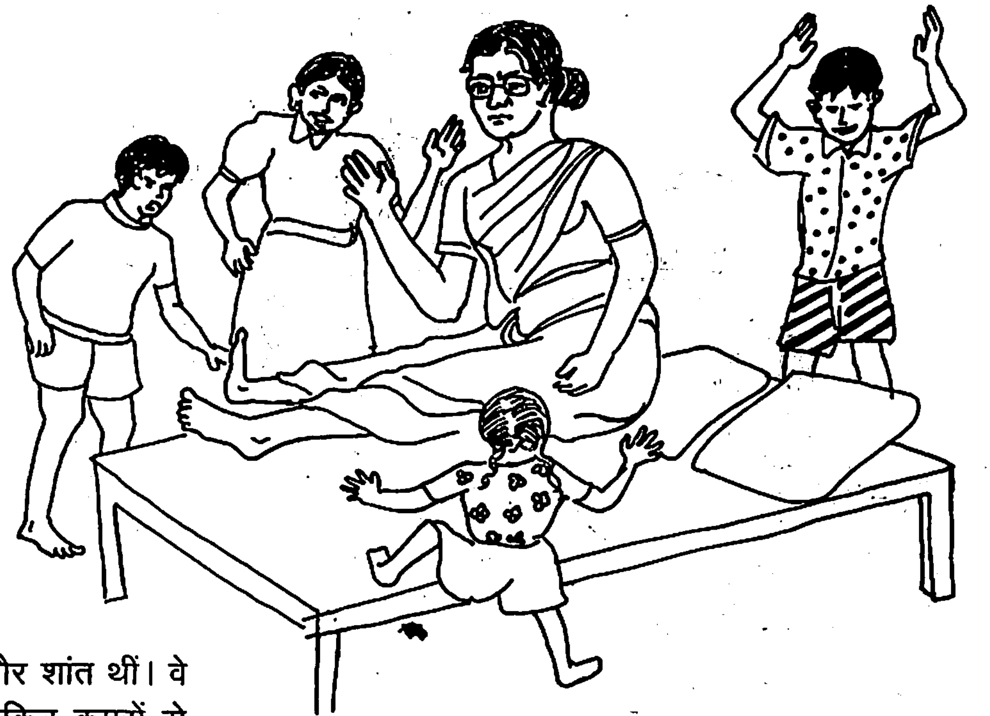
47–28

58–38

है न मज़ेदार। सिर्फ गिनती लिखने और बोलने में तो सारा मज़ा धरा रह जाता है। इस चार्ट में अभी भी बहुत कुछ बाकी है - पहाड़े, गुणनफल... वो अगले अंक में।

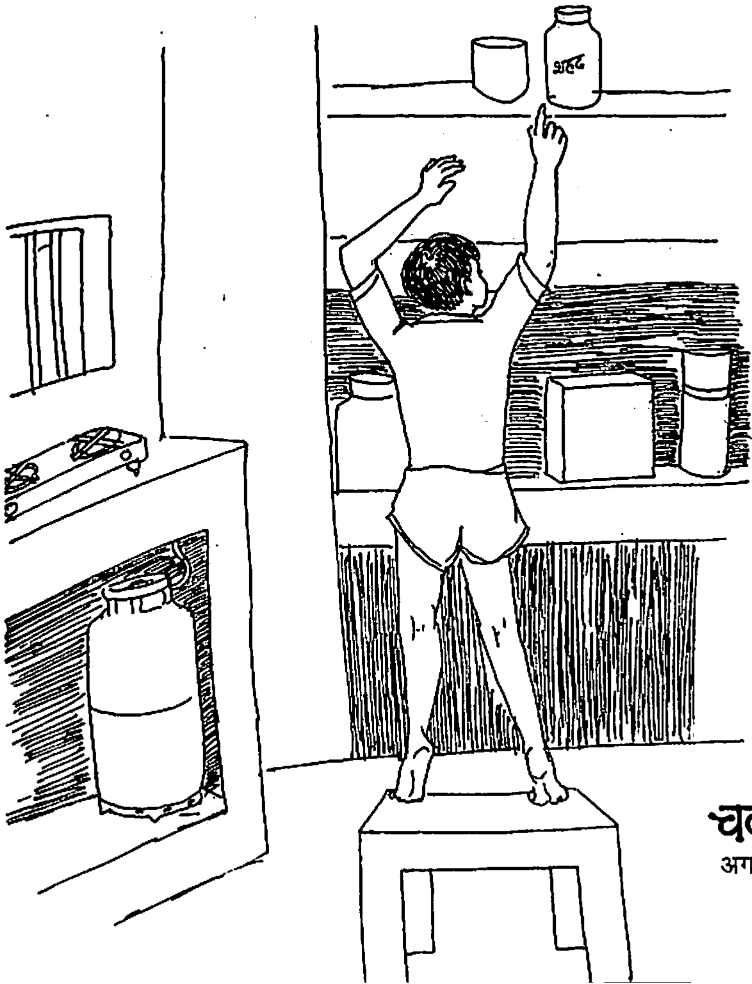
©अंजली नरोना, © चित्र : विवेक वर्मा

चाची का दाहसंस्कार



बुधवार 5 अप्रैल के दिन, शाम छह बजे चाची चल बसीं। और ठीक बीस मिनट बाद फिर से जी उठीं।

स्वभाव से चाची काफी सहनशील और शांत थीं। वे घर में इधर-उधर डोलती रहतीं, लेकिन कमरों से अंदर बाहर हो रहे ढेर सारे छोटे बेटों, बेटियों, भतीजों और भांजियों पर कम ही ध्यान धरतीं। पर जाने क्यों अपने दस साल के भतीजे सुनील के प्रति उनके मन में ढेर सारा विद्वेष था। वह एक सरल सहज महिला थीं जो सुनील को कभी समझ न पाईं थीं। सुनील चाची के अपने बेटों से ज़रा ज़्यादा होशियार, संवेदनशील और किसी भी तरह की डाँट-डपट का विरोध करने वाला बच्चा था। साथ ही ज़्यादा खूबसूरत भी था।



इसके अलावा एक और वजह थी कि वह सुनील पर ज़रूरत से कहीं ज़्यादा भुनभुनाती रहतीं। और वह यह कि जब सुनील के मम्मी पापा ऑफिस जाते तो चाची को ही उसके लिए खाना बनाना पड़ता। यह चाची को बिलकुल न भाता।

सुनील अपने प्रति चाची की इस ईर्ष्या को समझता और उसे और हवा देने की हर मुमकिन कोशिश करता। वह एक बेहद शरारती बच्चा था। चाची को परेशान करने के लिए वो छोटी-छोटी कई तरह की हरकतें करता। जैसे सोते समय चाची के पीछे भट्ट से हवा भरी पन्नी फोड़ देना। या चाची के सूखते पायजामे की चौड़ाई पर फिकरे कसना।

5 अप्रैल की शाम सुनील के हौंसले कुछ ज़्यादा ही बुलंद थे। भूख लगी तो शहद उड़ाने के चक्कर में वह रसोई में जा पहुँचा। लेकिन शहद की शीशी ऊपरी खाने में रखी थी। सुनील इतना लम्बा न था कि आसानी से उस तक पहुँच पाता। अपनी उँगलियों को किसी तरह शीशी तक पहुँचाकर उसे अपनी ओर किया ही था कि फटाक से शीशी ज़मीन पर आ गिरी।

सुनील घटना-ए-वारदात से रफ़ूचक्कर हो पाता, इससे पहले वहाँ चाची आ धमकीं। चप्पल उतारकर उन्होंने उसके सिर, पीठ, कंधों पर तीन-चार ज़बरदस्त धमाके जड़ दिए। और फिर फर्श पर बैठकर फूटफूटकर रो दीं।



'लेकिन तुम पकड़े जाओगे। पुलिस बहुत चालाक होती है। क्या तुम जेल जाना चाहते हो?' मधु ने पूछा।

'क्या वे मुझे फाँसी नहीं चढ़ा देंगे?'

'नहीं, वे छोटे बच्चों को फाँसी नहीं देते। वे उन्हें हॉस्टल भेज देते हैं।' मधु ने बताया।

'मैं हॉस्टल नहीं जाना चाहता।' सुनील झट से बोला।

'फिर चाची को न मारना। कम से कम इस तरह तो बिलकुल नहीं। चलो मैं तुम्हें एक नया तरीका बताती हूँ।'

अगर यह मार कहीं और से मिली होती तो सुनील शायद ही रोता। लेकिन यहाँ उसका अहम आहत हुआ था। वह कुछ बुदबुदाया और फिर झटके से कमरे से बाहर निकल गया।

सीढ़ियाँ चढ़कर वह छत पर पहुँचा और फिर अलग-थलग पड़ी बरसाती की दीवार में बने एक छेद तक जा पहुँचा। यहाँ उसका गुप्त ख़ज़ाना रहता था - कंचे, सद्दा, माँजा, लड्डू, जेबी चाकू। चाकू खोलकर उसने खिड़की की नर्म लकड़ी की चौखट पर तीन बार वार किए। 'मैं उन्हें मार डालूँगा।' वह गुस्से में बुदबुदाया - 'मार डालूँगा...मार डालूँगा।'

'तुम किसे मारने वाले हो सुनील?' यह सुनील की ममेरी बहन थी। पका-सा रंग और एकदम दुबली-पतली बारह साल की लड़की - मधु। सुनील की चाची उसकी मामी थी। यह एक बड़ा परिवार था।

'चाची!' सुनील ने कहा। 'वो मुझसे नफरत करती हैं, मुझे पता है। लेकिन मैं भी उनसे नफरत करता हूँ। इस बार तो मैं उन्हें मार ही डालूँगा। मैं इस चाकू से उनके सीने पर तीन बार वार करूँगा।' चाकू दिखाते हुए वह बोला।

मधु कागज़, पेंसिल लाई। अपने हाथों और घुटनों के बल बैठकर और चेहरे पर पूरी संजीदगी लाते हुए उसने चाची का एक चित्र उकेर डाला। फिर लाल रंग से चाची के पेट के पास एक बड़ा-सा दिल बना दिया।

'अब इसे मार डालो।' मधु फुसफुसाई।

सुनील की आँखों में चमक आ गई।

क्या खेल है। मधु से आप कुछ न कुछ नायाब चीज़ की उम्मीद कर सकते हो।

उसने लकड़ी के फ्रेम के सामने चाची की फोटो रखी और उनकी छाती पर तीन वार किए।

'तुमने उन्हें मार डाला।' मधु बोली।

'क्या किस्सा तमाम हुआ?' सुनील बोला।

'हूँ। तुम चाहो तो अब हम उनका दाहसंस्कार भी कर सकते हैं।' मधु की राय थी।

'ठीक है।' सुनील बोला।

मधु ने एक फटा हुआ कागज़ लिया। उसे घुचुड़-मुचुड़ किया। सुनील की खुफिया जगह से माचिस की डिब्बी निकाली और कुछ ही मिनटों में चाची स्वाहा हो गईं।

'बेचारी चाची।' मधु बोली।



'शायद हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था।' सुनील को अपनी करनी पर अफसोस हुआ।

'मुझे पता है, अब हम इस राख को नदी में सिरा देंगे।' सुनील बोला।

'क्या, नदी? ओह नाली से ही काम चल जाएगा।' कहते हुए मधु ने राख उठाई, छज्जे से झुकी और दोनों हाथ फैला दिए। हवा में डोलती राख नीचे की ओर उड़ चली। कुछ अनार के पेड़ पर टिक गई और कुछ झूमती-झामती नाली तक जा पहुँची। कुछ को रसोई से आते पानी के एक रेले ने खींच लिया। मधु ने मुड़कर देखा।

सुनील के गालों पर मोटे-मोटे आँसू लुढ़क रहे थे।

'तुम रो क्यों रहे हो?' मधु हैरान थी।

'चाची!... मैं उनसे इतनी भी नफरत नहीं करता था।'

'फिर तुम उन्हें मारना क्यों चाहते थे।'

'वो अलग बात है।'

'तो फ़िर नीचे चलें, मुझे स्कूल का बहुत-सा काम करना है।'

जैसे ही वे सीढ़ी उतरे, सामने से चाची आती नज़र आईं।

'ओह चाची!' सुनील चीखा।

और तेज़ी से जाकर उनकी मोटी, थुलथुली कमर से जा लिपटा।

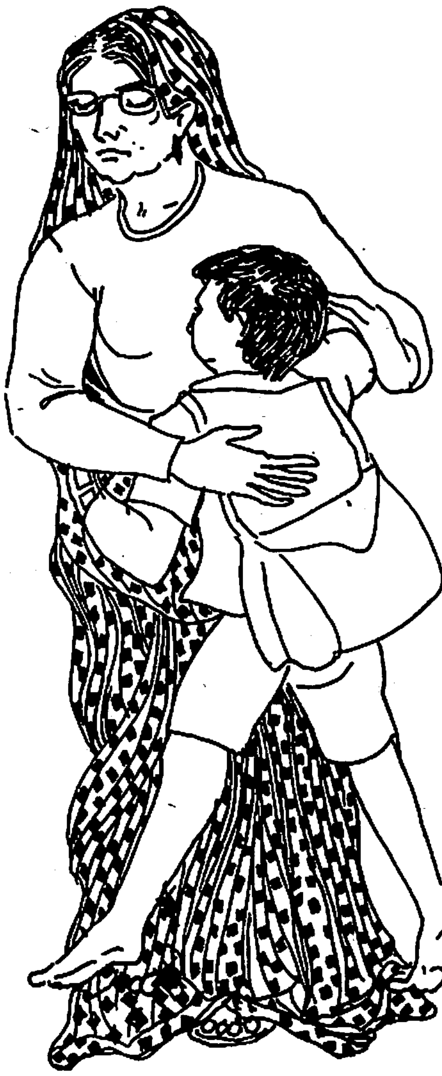
'अब यह क्या है?' चाची बुदबुदाई। 'इस बार नया क्या है?'

'कुछ नहीं चाची। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। प्लीज़ हमें छोड़कर मत जाना।'

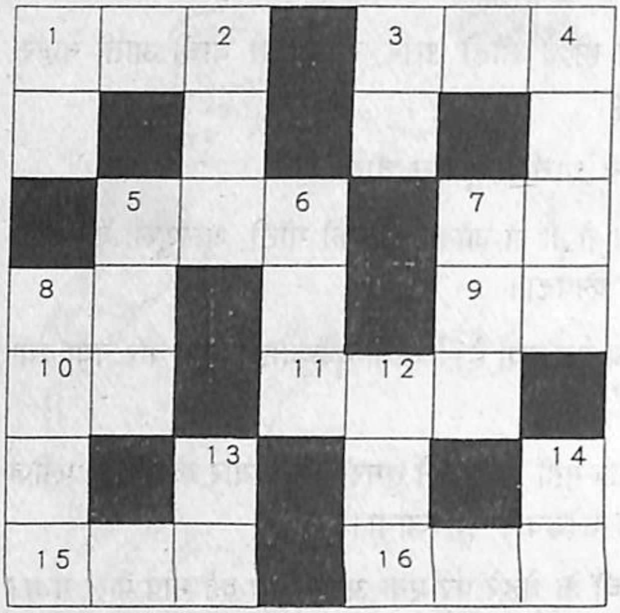
चाची के चेहरे पर एक असमंजस का भाव फैल गया। उसने गुस्से से लड़के को देखा। लेकिन उसकी आँखों में सच्चा दुलार देख उन्हें तसल्ली हुई।

'शायद वह सचमुच मेरा बहुत ख्याल करता है।' चाची ने सोचा और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगीं। फिर सुनील का हाथ थामकर रसोई की ओर चल दीं।

● रस्किन बॉण्ड ● चित्र : अरविंद टोपो



चित्र-पहेली



बाएँ से दाएँ

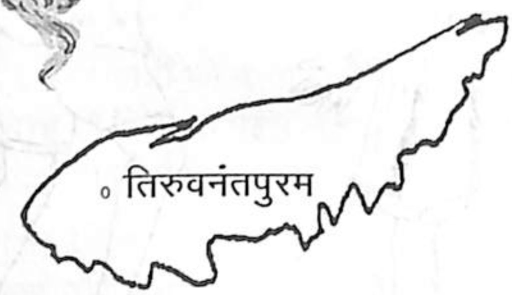
1.



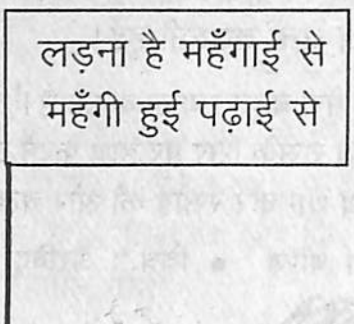
3.

$25-25+52 = ?$

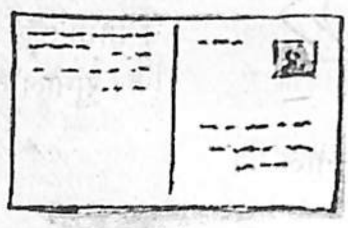
5.



7.



8.



9. शतरंज में है दुख के लिए एक उर्दू शब्द

10.



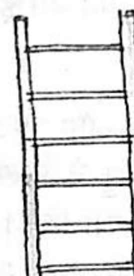
11.



या



15.



16.

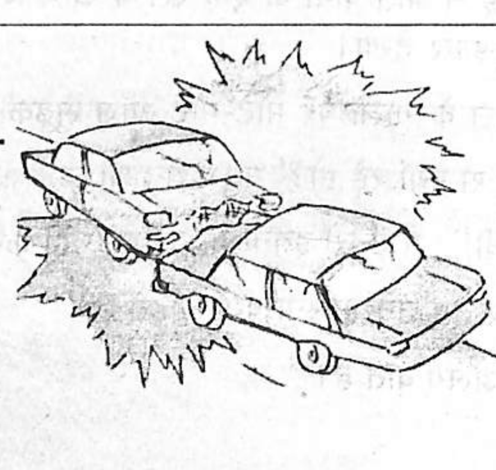


ऊपर से नीचे

1.



2.



3.



4.



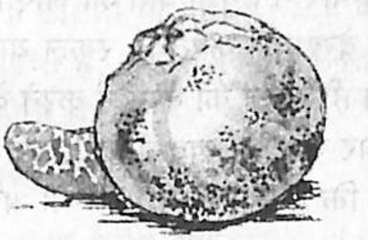
5.



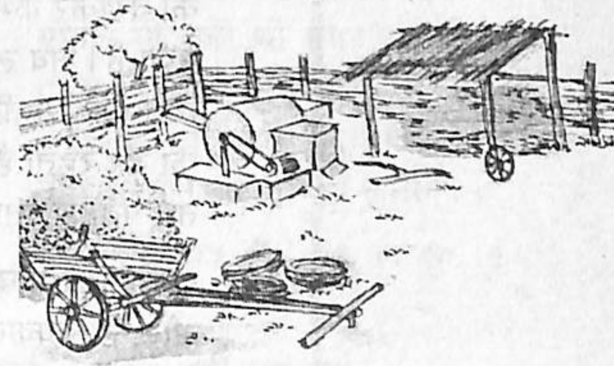
6.

कटहल में
है झूलना..?

7.



8.



12.



13.



14.

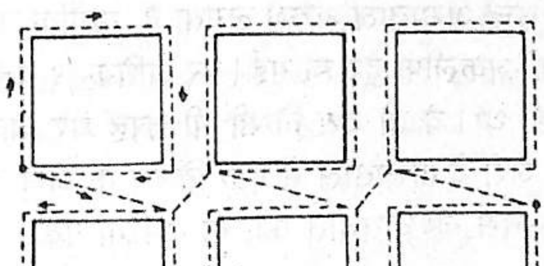


जुलाई 2004 अंक की माथापच्ची व चित्र पहेली के हल

1.

चाबी, मछली और कछुआ!

2.



	बाँ	स				ब	या	
क		र	स		फु	र्		स
ल			ले	ख	क			म
म	र	क	ट		नी	ल	गा	य
	सी						ज	
अ	द	र	क		क	स	र	त
ठ			टो	क	री			म
न्नी		प	री		ब	स		गा
	छा	ता				वा	ण	

अस्पताल में बच्चे

हो सकता है कि जब हम स्वस्थ हों, चुस्त-तंदुरुस्त हों, तब बीमार लोगों को देखकर कभी-कभार मन में ये बात आ जाए कि बीमार होने में कितना मज़ा है। सब लोग देखभाल करते हैं, स्कूल या काम पर जाने की कोई चिंता नहीं रहती, न ही स्कूल का काम न करने के कारण पड़ने वाली मार का डर रहता है। पर जब हम खुद बीमार पड़ते हैं तो बेचैन हो उठते हैं। तब पता चलता है कि बीमारी किसी को भी अच्छी नहीं लगती।

कभी अगर कुछ इस तरह बीमार पड़ें कि अस्पताल में भर्ती होना पड़े, तो और भी दिक्कत। न खेल सकते हैं, न कूद सकते हैं। बस दिन भर पड़े रहो। कई बार खाने-पीने में भी परहेज़ करना पड़ता है। और ढेर सारी दवाइयाँ लेनी पड़ती हैं, सो अलग। सुई लगती हैं, बोतल चढ़ती है.... जाने क्या-क्या सहना पड़ता है। कभी-कभी तो ऐसे डॉक्टर और नर्स मिल जाते हैं जो हमसे प्यार से बात करें, हमारा ध्यान रखें। पर कभी-कभी ये लोग भी डाँटते हैं, गुस्सैल किस्म के होते हैं।

इस बार हमने अस्पताल में भर्ती कुछ बच्चों से उनके इस अनुभव के बारे में बातचीत की। कुल मिलाकर हमारा अनुभव काफी मिला-जुला रहा। कुछ बच्चे तो ऐसे मिले जो अस्पताल के अजीब से माहौल से काफी डरे-सहमे से थे। वे इलाज कराने अपने गाँव से दूर आए थे। घरवालों से दूर, इस अनजान माहौल में रहने की मजबूरी उनके चेहरों पर साफ दिखाई देती थी। पर कुछ बच्चे ऐसे भी थे जो अपनी तकलीफ के बावजूद मज़े में थे। ये मस्तमौला बच्चे अपनी बोरियत दूर करने के लिए अस्पताल भर में घूम आते थे, कभी दूसरे बेड के मरीज़ों से बतियाते थे, रेडियो सुन लेते थे....

कुछेक बच्चों ने बताया कि उन्हें अस्पताल अच्छा लगता है, क्योंकि यहाँ आकर इलाज कराके उनकी तकलीफ दूर हो गई। पर अधिकतर बच्चों को इससे कोई मतलब नहीं था। वे तो बस किसी भी तरह घर जाना चाहते थे। ऐसा लगता था जैसे वे अस्पताल में एक किस्म के जेल का अनुभव कर रहे हैं। हमने उनसे जो बातचीत की, वो तुम भी पढ़ो.....

मनोज निगम, दुलदुल विश्वास

भोपाल के कमला नेहरु अस्पताल के एक वॉर्ड में हमें दीवान सिंह मिला। 2-3 दिन पहले ही उसका एक ऑपरेशन हुआ था। वह वहाँ अपने पापा के साथ था। बातचीत में उसने बताया -

अब तो तबीयत ठीक हो रही है। जब बिस्तर पर पड़े-पड़े थक जाता हूँ तो पूरे अस्पताल में घूम आता हूँ। कोई मुझे डाँटता भी नहीं है। यहाँ के डॉक्टर और नर्स अच्छे हैं....पर इंजेक्शन लगता है तो बहुत दर्द होता है।

..... मेरे सबसे अच्छे दोस्त मेरे पापा हैं।

दीवान सिंह, टप्पा तलेन, नरसिंहगढ़, म.प्र.

पेट में बहुत तेज़ दर्द था - यहाँ एक तरफ। गाँव में दवाखाने में बताया तो उन्होंने दवाई दी। जब ठीक नहीं हुआ तो यहाँ भेज दिया। यहाँ दवाई देते हैं। बोतल भी चढ़ी थी मगर अब निकाल दी है। लेकिन खाने को कुछ नहीं देते - बस दूध और चाय। दूध पीने का मन नहीं करता। अच्छा नहीं लगता।

सुनीता, 12 वर्ष, ब्यावरा, म.प्र.

आज सुबह नौ बजे ही भर्ती किया है। बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा। घर जाना है .... अभी।

कहते हुए योगिता अपने आँसू पोंछकर शर्माते हुए मुस्कुराने लगी। उसकी माँ ने बताया कि थोड़ी देर पहले वह बहुत रो रही थी। कह रही थी - घर जाकर गोली-दवाई सब खा लूँगी, लेकिन यहाँ नहीं रहना। हमने पूछा, क्या हो गया है?

पता नहीं। अचानक मुँह टेढ़ा हो गया था। और गाल में, गले में झुनझुनी चलती है। नाक में दर्द रहता है।

योगिता, सातवीं, जहाँगीराबाद, भोपाल, म.प्र.

सुनील कोई 11-12 साल का होगा। कैंसर अस्पताल में वह हमें अपने बेड पर नहीं मिला। सामने वाली बेड की आंटी जी के पास बैठकर उनका रेडियो जो सुन रहा था। उससे हाल-चाल पूछने पर उसने छूटते से ही कहा -

मुझे ब्लड कैंसर है। इसलिए इलाज करवाने यहाँ आना पड़ता है। कीमो (कीमोथेरेपी) चल रहा है। बोतल से देते हैं कीमो। पहले मुझे हर समय बुखार रहता था। फिर जाँच करवाई तो ब्लड कैंसर निकल गया।

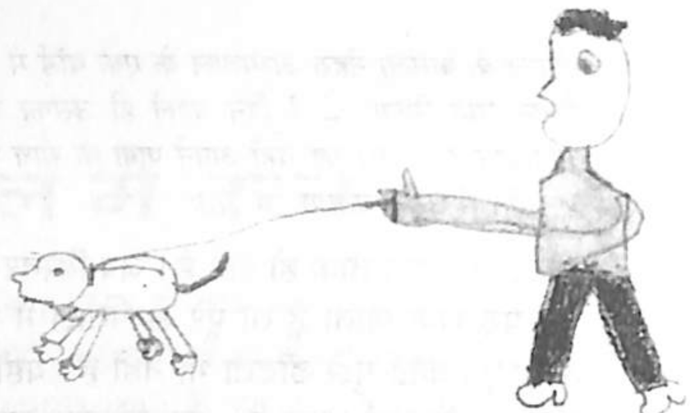
सुनील के बाबा ने हमें बताया कि उसे हर पाँचवें दिन कीमोथेरेपी के लिए यहाँ आना पड़ता है। डॉक्टर बताते हैं कि दो साल तक इलाज चलेगा। चकमक के बारे में, चकमक चर्चा के बारे में बताने पर सुनील झट अपने अनुभव लिखने को तैयार हे गया। उसने लिखा -

घर से हम यहाँ आए हैं इलाज कराने। यहाँ हम दिन में भी सोते हैं। अस्पताल में अच्छा नहीं लगता। घर पर काकी है, बुआजी है, एक भैया है, काका, बाबा और एक छोटी गुड़िया। यहाँ अच्छा नहीं लगता। छोटी गुड़िया की बहुत याद आती है।

सुनील कुमार शर्मा, पाँचवीं, खनोटा, राजगढ़-ब्यावरा, म.प्र.

मुझे पीलिया हो गया है। तेरह दिन से अस्पताल में हूँ। दो बोतल खून चढ़ चुका है। एक बोतल और चढ़ाना है। अभी अकेला हूँ, पापा खून का इंतज़ाम करने गाँव गए हैं। आसपास के बेड के लोग मेरा ख्याल रखते हैं। सिस्टर भी देखने आती है।

धरम सिंह, सिरोंज, विदिशा, म.प्र.



राहुल साहू, बाग दिलकुशा, भोपाल, म.प्र.

(राहुल के सिर में टी.बी. के कारण पानी भर गया था। तीन दिन पहले ही उसका ऑपरेशन हुआ। चकमक देखकर उसने कहा - मैं लिखूँगा नहीं, चित्र बनाऊँगा।)

सरिता के सिर के पीछे की तरफ पट्टी बँधी हुई है। वह अपने पलंग पर अपने मामा के सहारे टिककर बैठी थी। उसके मामा ने हमें बताया कि उसके सिर में दो बड़े ऑपरेशन करके ट्यूमर निकाले गए हैं। ऑपरेशन कामयाब थे और अब वह ठीक है। पर सरिता के चेहरे पर खुशी नहीं है। पूछने पर उसने बताया -

हाथ में एक इतनी लम्बी सुई घुसाकर रखा है। हर समय दुखता है। पैर में भी घाव है – पट्टी बँधी है। डॉक्टर कहते हैं कि बैठे रहो। बैठे-बैठे थक जाती हूँ। रोज़ सात-सात इंजेक्शन लगते हैं। बहुत दर्द होता है। मैं जोर-जोर से रोती हूँ। जब डॉक्टर पट्टी बदलते हैं तो बहुत दुखता है। तब भी मैं बहुत रोती हूँ।

सरिता, 16 वर्ष, पिपलानी, भोपाल, म.प्र.

7-8 दिन से पेट में बहुत दर्द था। दर्द ज़्यादा हो गया तो अस्पताल ले आए। मंगलवार को ऑपरेशन हुआ। अब बोतल चढ़ रही है। अब दर्द नहीं है। .... अस्पताल अच्छा है। यहाँ आकर हमरा दर्द ठीक हो गया। पर दिन भर कुछ नहीं करते। बस पड़े रहत हैं।

यह नीरज है जिसका 5-6 दिन पहले पेट का ऑपरेशन हुआ है। उसे जब हमने चकमक दिखाई तो उसने कहा -

एक कविता सुनाऊँ? हल्की कि बड्डी? अं—

एक चिड़िया के बच्चे चार,
घर से निकले पंख पसार.....

फिर घर के बारे में पूछने पर बताया -

घर में भैया है, एक छोटा भाई है, बाई है और एक छोटी बहन है - 11 महीने की - नाम भागवती। बाई की और छोटी बहन की बहुत याद आती है।

नर्स और डॉक्टरों के बारे में पूछने पर -

यह दीदी तो हमसे बोलत ही नहीं। डॉक्टर बात करते हैं। नाम पूछते हैं, दर्द हैबे कि नहीं, पूछत हैं। नर्स आती है तो डर-सा लगता है - सुई लगाने से। सुई लगाने पर दर्द-सा होता है न।

नीरज रतिराम, पाँचवीं, करईखेड़ा, सिरोंज, विदिशा, म.प्र.



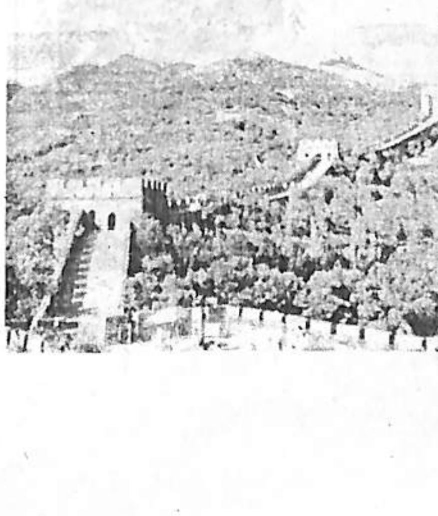
चकमक समाचार

सैंतीस देशों के बच्चे पहुँचे चीन

पिछले महीने कई बच्चों को चीन का न्यौता मिला। दुनिया भर से सैंतीस देशों के चार हज़ार बच्चों ने चीन की यात्रा की। हमारे देश के बीस बच्चों ने भी इस कार्यक्रम में शिरकत की। भोपाल से मैं यानी पूजा और सानिया भी चीन गईं। भारतीय पोशाकें और नृत्य खास आकर्षण का केन्द्र रहे। भारतीय बच्चों ने घूमर, कत्थक, भरतनाट्यम, मणिपुरी, गरबा, कथकली नृत्य पेश किए। सब देशों के बच्चे हमारे साथ फोटो निकलवाने को उतावले हो रहे थे। शायद उन्हें हमारी डांस पोशाकें अच्छी लग रही थीं।

हमने पढ़ा था कि चीन में लोग साँप खाते हैं। हमें लगा था वहाँ बस चाऊमिन जैसी चीज़ें मिलेंगी। पर ऐसा कुछ भी नहीं दिखा। जैसे हमारे देश के किसी हिस्से के कुछ लोग साँप खाते हैं ऐसे ही वहाँ होगा। वहाँ की सड़कें काफी अच्छी हैं। वहाँ छोटे-छोटे घरों को तोड़कर बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई जा रहीं थीं।

वहाँ की सड़कों पर हर बीस पच्चीस मीटर पर हमें फुटपाथ के लिए सीढ़ी दिखी, ताकि







शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों को कठिनाई न हो। वहाँ हमें चार पहिया वाहन और साइकिलें ही ज़्यादा नज़र आईं।

हम दिल्ली से हांगकांग और फिर वहाँ से बीजिंग पहुँचे। बीजिंग से तियाजिन और फिर हरबोअर गए। वहीं के एक स्कूल में हमारी प्रस्तुति होनी थी। हम वहाँ पाँच दिन रहे। और सभी बच्चे चाइना वॉल देखने गए। हम सभी में रेस लगी थी, चाइना वॉल पर पहले चढ़ने की। सभी को एक जगह तक पहुँचना था, मैं तो वहाँ तक नहीं पहुँच पाई क्योंकि चाइनीज़ वहाँ जाने से मना कर रहे थे। पर कुछ बच्चे तो चले ही गए। चाइना वॉल पर छोटे छोटे रूम बने हैं। उसकी सीढ़ियाँ चौड़ाई में छोटी थीं। हम दीवार के सहारे चढ़ रहे थे। छत पर चढ़कर आसपास देखा। बहुत खूबसूरत दृश्य दिखा।

फिर हम बीजिंग गए। वहाँ हमने डांस किया। मलेशिया के बच्चों ने कत्थक नृत्य किया। हमें बड़ा अच्छा लगा। चीन में तो लड़कियाँ सारे काम करती हैं, ट्रक चलाती हैं, बस चलाती हैं। सब बहुत अच्छा लगा। हमें सभी देशों के साथ मिलकर मित्रता बढ़ानी चाहिए। इस यात्रा को ज़िंदगी भर नहीं भूल पाऊँगी।

⊙ पूजा सरोदे, नवमीं, भोपाल, म.प्र.

ईदगाह का मंचन हुआ

भोपाल के कला केन्द्र भारत भवन में प्रेमचंद की 125वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर उनकी लिखी कहानियों पर आधारित नाटकों का मंचन भी हुआ। प्रेमचंद को बाल रंगकर्मियों ने भी याद किया। टोली नामक बाल रंग समूह ने दो अगस्त को 'ईदगाह' नाटक खेला। इस नाटक का निर्देशन विभा मिश्र ने किया। बच्चों ने ज़ोरदार अभिनय किया और खचाखच भरे हॉल में खूब तालियाँ बटोरीं।

ईदगाह नामक कहानी का मुख्य पात्र हामिद है। हामिद के परिवार में उसके अलावा बस एक और सदस्य हैं-वह हैं उसकी दादी अमीना। ईद आती है। उसके गाँव के बच्चे मेले में जा रहे हैं। पर हामिद किसके साथ जाए? उसकी दादी अमीना बहुत बूढ़ी हैं।



आखिर में तय होता है कि वह अपनी मित्र मंडली के साथ जाएगा। सब बच्चों को मेले से सामान खरीदी के लिए पैसे मिलते हैं। अमीना के पास हामिद को देने को बस चार पैसे होते हैं। हामिद इन पैसों को लेकर मेला जाता है। मेले में पहुँचने के बाद सब अपनी पसंद की चीजें खरीदने लग जाते हैं। कोई भिश्ती खरीदता है तो कोई सिपाही खरीदता है। फिर सभी बच्चे मिठाई खाने चले जाते हैं। हामिद भी कई चीज़ें देखता है। हर चीज़ देखने के बाद अपने आप से तर्क करता है। हामिद के पास तो कुल चार ही पैसे हैं।

हामिद को वहाँ दादी की याद आती है। आखिर में वह दादी के लिए एक चिमटा खरीदता है। लौटते हुए सारे मित्र उसकी हँसी उड़ाते है। हामिद चिमटे के साथ घर लौटता है। उसकी दादी अमीना चिमटा देखकर बहुत खुश होती हैं।

⊙ रपट : शैलेन्द्र

भूख से मच्छरों की मौत!!

दिल्ली से ग्वालियर ले जाए जा रहे कई कई मच्छर भूख से मर गए। ये मच्छर इस पड़ताल के लिए ग्वालियर की एक परीक्षण शाला में ले जाए जा रहे थे कि उनमें कौन कौन से विषाणु उपस्थित हैं। यह परीक्षण दिल्ली के एक संस्थान द्वारा डेंगू की रोकथाम के लिए किया जा रहा था। मच्छरों की मौत उनके साथ ग्लूकोस की पट्टियाँ न रखे जाने के कारण भूख से हुई।

समुद्री जीवों का अनोखा संसार



चकमककी एक पाठक और रचनाकार हैं ऋचा मनु से तुम परिचित होगे। पिछले महीने उनकी एक किताब **समुद्री जीवों का अनोखा संसार** प्रकाशित हुई। इस किताब में समुद्री जीवों के बारे में रोचक जानकारी है।



खेल समाचार

एथेंस ओलम्पिक



दो सौ दो देश! सैंतीस खेल! ग्यारह हज़ार जाँबाज़ खिलाड़ी! तीन हज़ार चार सौ दस पदक! बेइंतहा मज़ा और रोमांच! एथेंस के सत्रह दिन गज़ब के होंगे। पूरे एक सौ आठ साल बाद एथेंस में फिर से ओलम्पिक हो रहे हैं। आज उन्नीस तारीख को पदक तालिका में हमारा एक पदक नज़र आ रहा है। हम अट्ठाइसवें नम्बर पर हैं। चीन अठारह पदक जीतकर पहले नम्बर पर है। अमेरिका दूसरे नम्बर पर और ऑस्ट्रेलिया तीसरे नम्बर पर बना हुआ है। हमारे निशानेबाज़ राज्यवर्धन ने रजत पदक जीता। यह किसी भारतीय द्वारा अकल मुकाबले में जीता पहला रजत पदक है। हालाँकि अंजलि भागवत वैसा प्रदर्शन नहीं कर पाईं जिसके लिए वे जानी जाती हैं। अगर अभी तक केप्रदर्शन की बात करें तो हमारा प्रदर्शन अब तक मिलाजुला रहा है। हालाँकि कुछ सीनियर खिलाड़ियों ने बड़ा निराशाजनक प्रदर्शन किया। बहादुर प्रसाद जैसे खिलाड़ी ने तीन-तीन फाऊल किए। हमारे कुछ खिलाड़ी फायनल तक पहुँचे। कुछ चौथे या पाँचवें नम्बर पर रहे। हॉकी और टेनिस में हमारा प्रदर्शन आशा जगाता है। हॉकी में हम पहले मैच में हॉलैण्ड से हारे। पर अगले मैच में दक्षिण अफ्रीका की टीम को हमने दो के मुकाबले चार गोल से शिकस्त दी। अगले मैच में हमारी टीम ने शानदार प्रदर्शन किया। मगर वह ऑस्ट्रेलिया से चार के मुकाबले तीन गोल से हार गई। कर्णम मल्लेश्वरी चोट के कारण मुकाबले में नहीं रहीं। टेनिस में पेस और भूपति शानदार खेल दिखा रहे हैं। उम्मीद है हम दो चार पदक लेकर लौटेंगे।









माथापच्ची

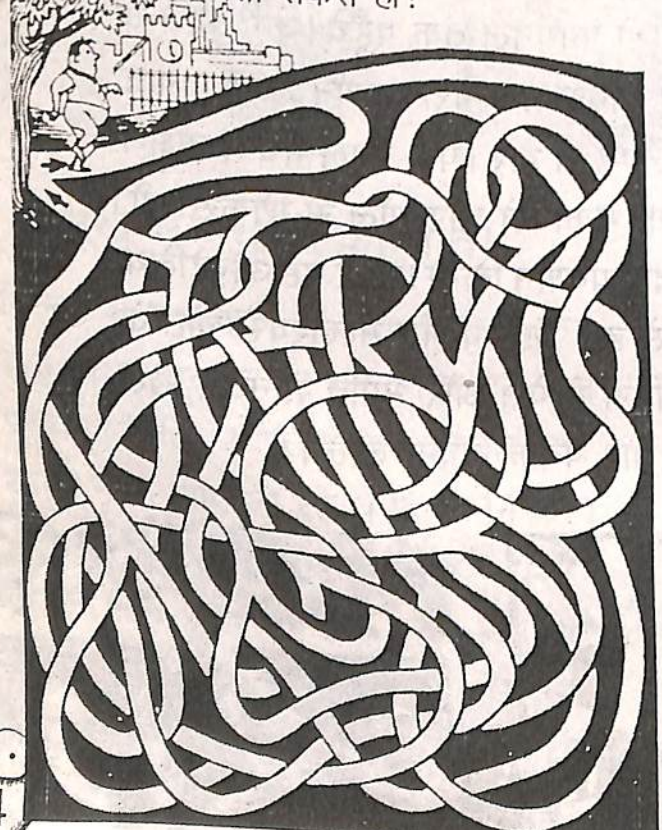
(1)

इन छह कार्डों में हर बच्चे ने अपना नम्बर लिख रखा है। इनमें से एक ने अपने मन में एक संख्या सोची है। तुम्हें बस इसी संख्या का पता लगाना है। वह संख्या इनमें से एक बच्चे की संख्या से 12 कम है। एक की संख्या से 9 कम और एक और बच्चे की संख्या से 6 कम है। अब बचे तीन! उनकी संख्या से 11, 4 और 1 ज़्यादा है। सभी बच्चों की संख्या तो तुम्हें चित्र में दिख ही रही हैं। बस ज़रा-सी माथापच्ची करना है।



(2)

इन महाशय को इसी पेड़ के पास लौटकर आना है। क्या तुम रास्ता बता सकते हो?



(3)

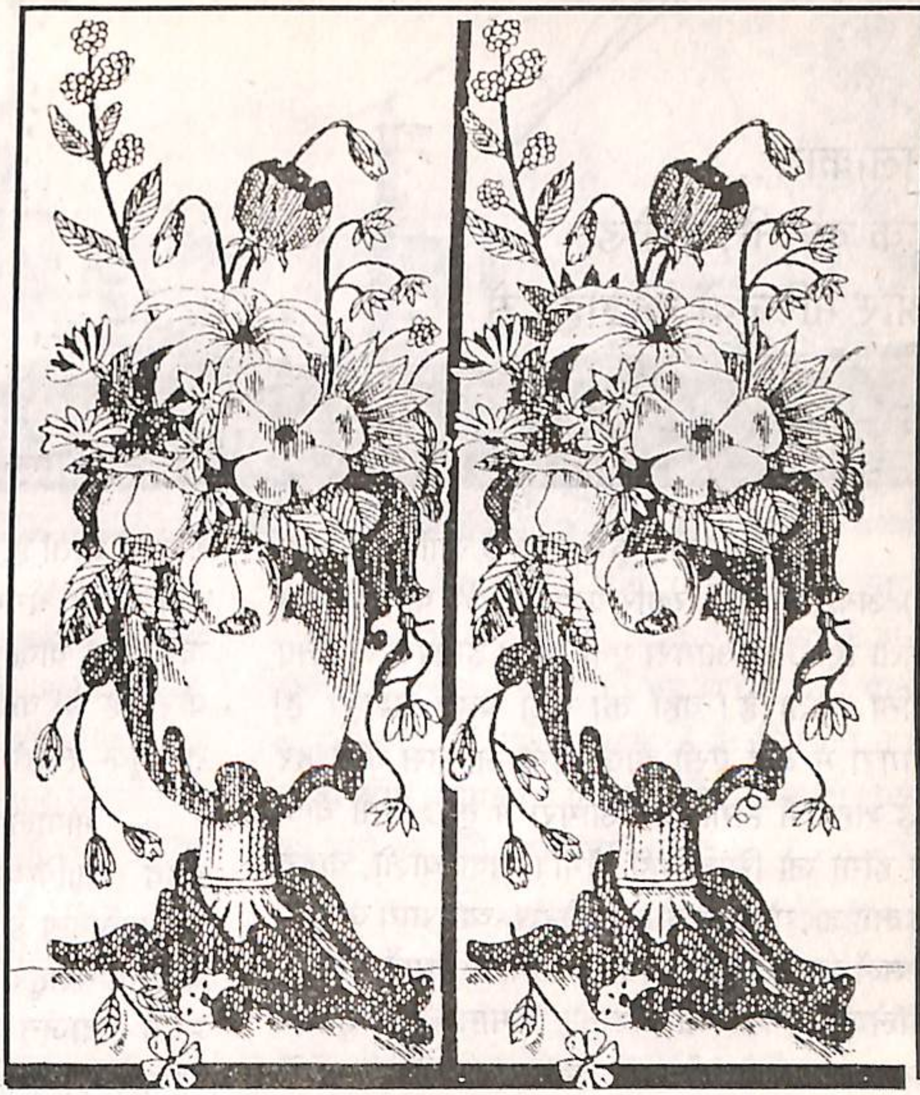
1 2 3 4 5 6 7 8 9 = 100

इन अंकों के बीच जोड़, घटाना, गुणा, भाग कोई भी निशान लगाओ। हाँ बस उसका हल सौ आए।



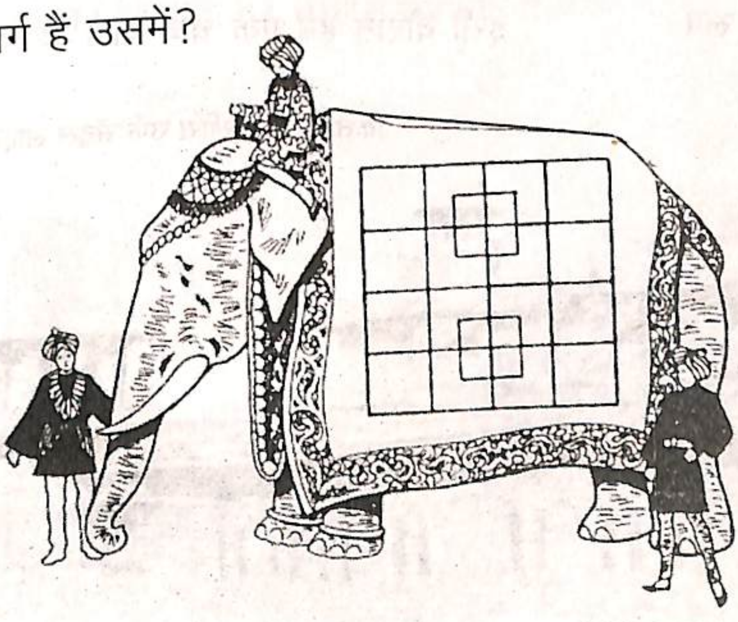
(4)

देखने में भले ही न लगे पर इन दो चित्रों में कुल दस अंतर हैं। गिनकर देख लो!



(5)

इस हाथी पर तुम्हें एक आकृति दिख रही होगी। ज़रा गिनो तो कुल कितने वर्ग हैं उसमें?

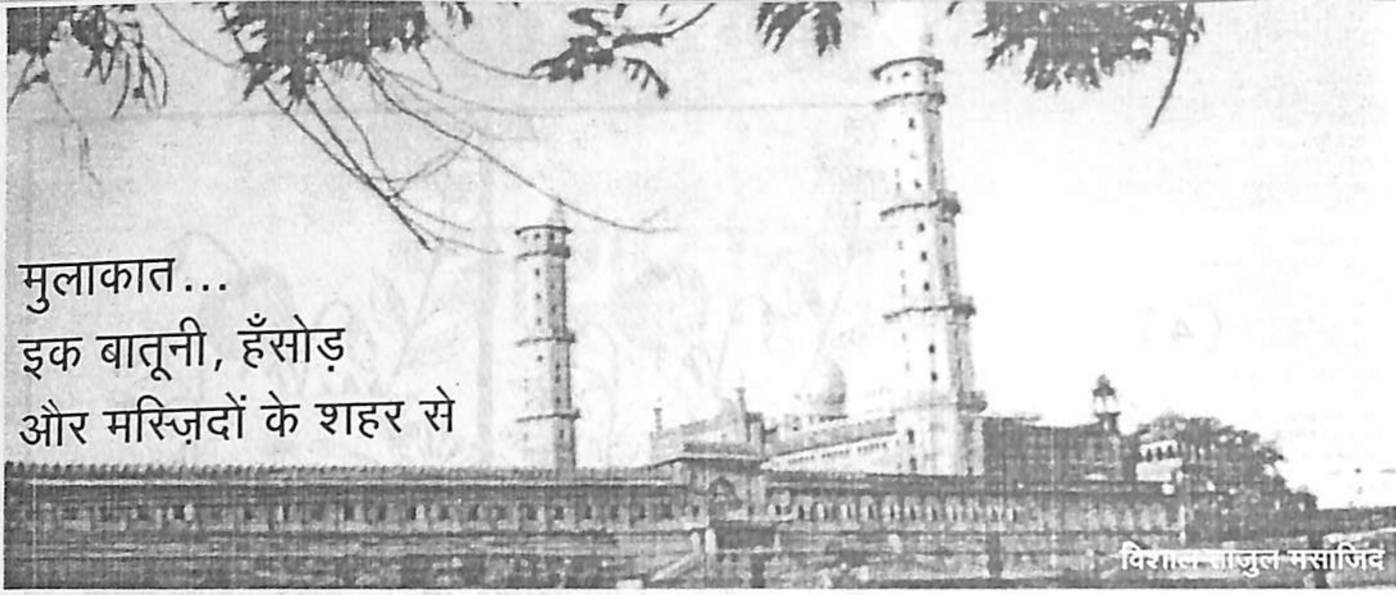


(6)

दस में दो हैं
बस में दो हैं
नौ में एक है
सौ में एक है

इस पहेली में किस चीज की बात की जा रही है?

मुलाकात...
इक बातूनी, हँसोड़
और मस्ज़िदों के शहर से



विशाल ताजुल मसाजिद

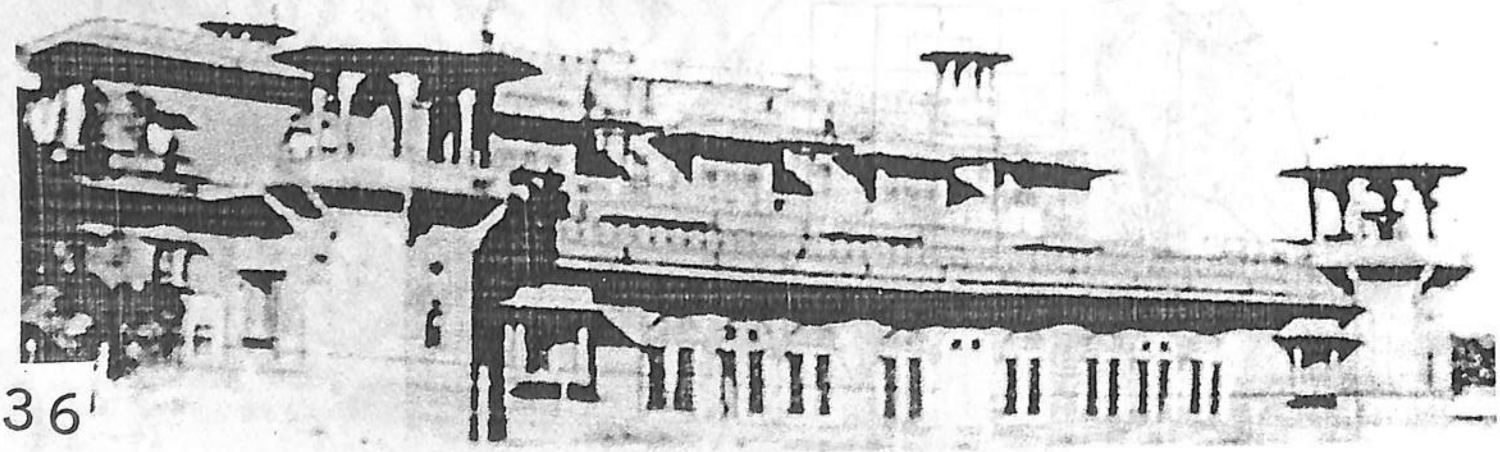
हर शहर की कुछ न कुछ खासियत होती है। अकसर यही खासियत उसकी पहचान बन जाती है। जैसे आगरा एक खास इमारत के लिए जाना जाता है। वहाँ का पेठा बहुत मशहूर है! आगरा में कई ऐसी चीज़ें होंगी जो उस जैसे हर बड़े शहर में होंगी। पर आगरा में कुछ ऐसी चीज़ें भी होंगी जो सिर्फ वहीं होंगी। भाषा-बोली, कहन या लहज़ा, पोशाक, मेले, त्यौहार-व्यवसाय जलसे, फसलें, कारखाने, नदी, धार्मिक जगहें, स्कूल कॉलेज, जंगल-जानवर, ... तमाम चीज़ें! तुम्हारे शहर या कस्बे की क्या खासियत है?

इस बार तुम्हारी मुलाकात एक ऐसे शहर से करवाते हैं जिसमें दर्ज़नों खूबियाँ हैं। कोई इसे झीलों के शहर के नाम से जानता है तो किसी को पहाड़ियों पर बसे एक ऐसे खूबसूरत शहर के रूप में याद आता है, जहाँ रह जाने को मन करता है। यहाँ नवाब, बेगमों से लेकर पान की शौकीनियत जैसी कई चीज़ें हैं। जी हाँ! हम भोपाल की ही बात कर रहे हैं! वही भोपाल जहाँ से सूरमा भोपाली ताल्लुक रखते हैं।

भोपाली यानी एक ऐसा हँसोड़ इंसान जो बेहद मज़ाकिया और संवेदनशील है। गज़ब का हाज़िरजवाब है। बेफिक्र और आरामपसंद लोगों के लिए मशहूर है। इस लेख को लिखने के दौरान हमने अंदाजन पचास लोगों से बात की.... यही कि भोपाल की क्या खासियत है? करीब करीब सभी ने शुरुआत भोपालियों के इसी बेफिक्र मिज़ाज से की। और हाँ लगभग सभी ने बेफिक्र को बेफिकरे कहा - यानी बेफिक्र से भी कुछ ज़्यादा!

इसी दौरान हम एक चाय वाले के पास

किताबों का जखीरा उर्फ सेंट्रल लाइब्रेरी





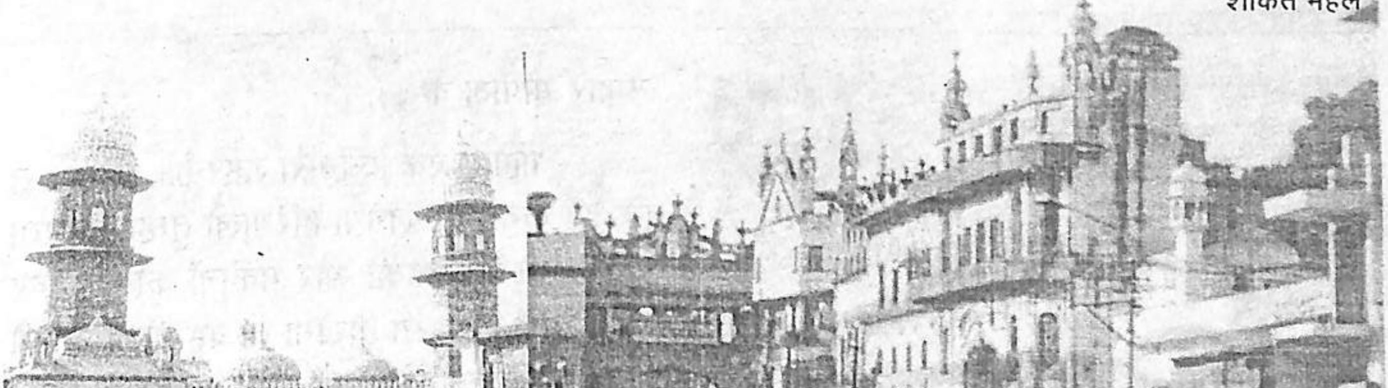
मिण्टो हॉल यानी पुराना विधानसभा भवन

गए। शाम के साढ़े चार बजे होंगे। जनाब दुकान बन्द करने की तैयारी में थे। हमने कहा यार चाय पिलाओगे? और बगैर जवाब का इंतज़ार किए बैठ गए। वो बोले .... अब खाँ बैठ गए हो तो चाय तो पिलाएँगेई। वो क्या है कि मियाँ मौसम अच्छा था। और क्या है के खाने पीने लायक तो कमाई होई गई है। इसलिए दुकान बस बन्द कर रहे थे। और इसके बाद वे तभी बन्द हुए जब हम वहाँ से रुखसत हो लिए।

भोपालियों का यही बातूनीपन बहुत मशहूर है। मामूजान और चाचूजान के किस्से सुने बगैर कौन सूरमा उनके हाथ से निकल सकता है। हाँ, यहाँ कोई भी मामूजान हो सकता है। कोई भी चाचूजान हो सकता है। तुम्हारी उमर के बच्चे से कोई बुजुर्ग कहता मिल जाएगा ... क्यों मामू स्कूल नहीं गए? शायद ही कोई बात खाँ से पहले शुरू होती हो। मसलन खाँ कहाँ गए थे? या खाँ चलें? और जगहों पर खाँ मुसलमानों के लिए ही कहा जाता होगा। भोपाल में ऐसा नहीं है। भोपाली होकर खाँ होने से नहीं बचा जा सकता।

अब से कोई बीस साल पहले की ही बात है। जब लगभग हर घर के सामने एक-दो पत्थर पड़े रहते थे। यही भोपालियों की बैठक हुआ करती थी। इन्हें वे पटिये कहते थे। आज की तरह घरों में बैठक का कमरा नहीं हुआ करता था। यारों-दोस्तों की महफिलें इन्हीं पटियों पर हुआ करती थीं। इनमें दुनिया जहान की खबरें कुछ इस अंदाज़

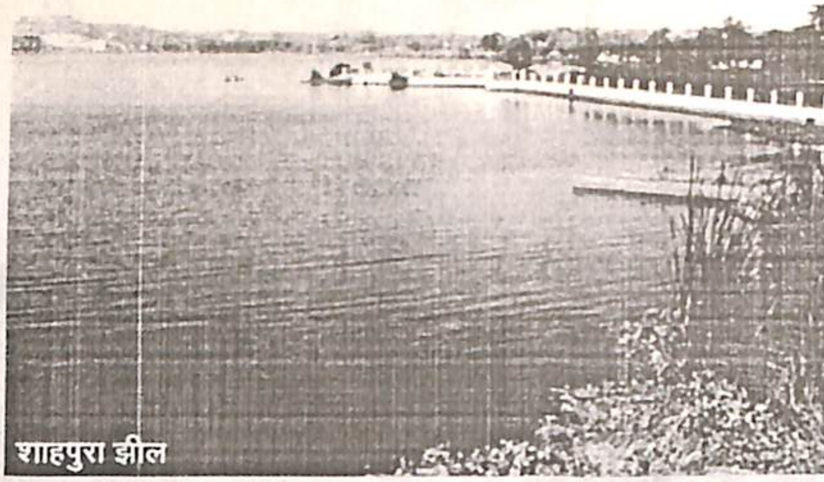
शौकत महल



जामा मस्जिद,

में बयान हुआ करतीं कि सुनने वाले हँस हँस के लोटपोट हो जाते। किस्से को बगैर किसी खींचतान के पेश करना इन पटियों पर जुर्म होता होगा।

'कौं खाँ काँ जाओगे?' बस या रेल से उतरते ही ऐसी कुछ आवाज़ें तुम्हारे कानों में पड़ेंगी। इससे पहले कि तुम कुछ बोलो ऑटो या बस वाला कहेगा... 'अरे खाँ! मतलब कहाँ जाओगे।' हो सकता है तुम किसी कॉलोनी का नाम बताओ और वो पूछें ... 'अरे खाँ ये बताओ ये दस नम्बर कने है या छह नम्बर कने!' आप पहली बार भोपाल आए हैं तो ज़रूर यह सब अटपटा लगेगा। यहाँ के बस स्टॉप के नाम ऐसे ही हैं। सात, दस ग्यारह तो छोड़ो सवा छह, साढ़े छह और कॉलोनी - पैतालीस बँगले, चौहत्तर बँगले, 1100 क्वार्टर और 1250...!


शाहपुरा झील

पुराना ज़माना...

कहते हैं राजा भोजपाल के नाम पर इस शहर का नाम भोपाल हो गया। उसने ही यहाँ का बड़ा तालाब बनवाया। भोपाल कई साल नवाबों के शासन में रहा। पर शोहरत मिली यहाँ की बेगमों को। उस ज़माने में महिलाएँ बड़ी बंदिशें झेलती थीं, उनकी दुनिया घर में सिमटी होती थी। तब भोपाल रियासत की बागडोर यहाँ की बेगमों ने न सिर्फ सँभाली बल्कि काफी काम भी किया। शायद ही किसी और जगह इतनी बेगमों ने शासन सँभाला होगा। इन बेगमों ने ताजुल मसाजिद जैसी कई खूबसूरत इमारतें बनवाईं। सड़कें बनवाईं। शाहजहाँ बेगम और सुल्तान जहाँ बेगम ने शिक्षा में बड़ी दिलचस्पी दिखाई। खासकर महिलाओं की शिक्षा में। उस ज़माने में यह एक बड़ा कदम था। सुल्तान जहाँ बेगम ने कई किताबें भी लिखीं।



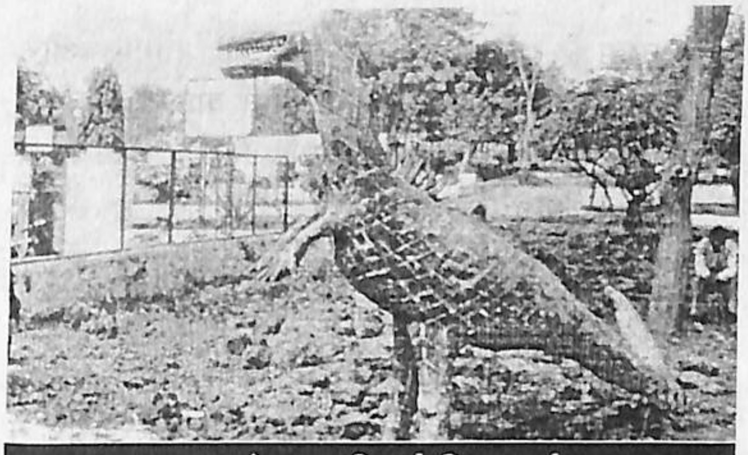
तरह-तरह की मछलियों का घर मछलीघर

नज़ारे भोपाल के ...

भोपाल एक हरा भरा शहर है। इतना हरा कि हर कदम पर लगेगा हरियाली तुम्हारा रास्ता रोके खड़ी है। सड़कों और मकानों को छोड़कर अगर तुम्हें कोई रंग दिखेगा तो वह नीला रंग ही होगा ... यहाँ की झीलों का रंग! तुम किसी ऊँची पहाड़ी से देखोगे तो लगेगा कि किसी हरी नीली, ऊँची-नीची चादर पर कुछ काली-सफेद सी डिज़ाइनें हैं।

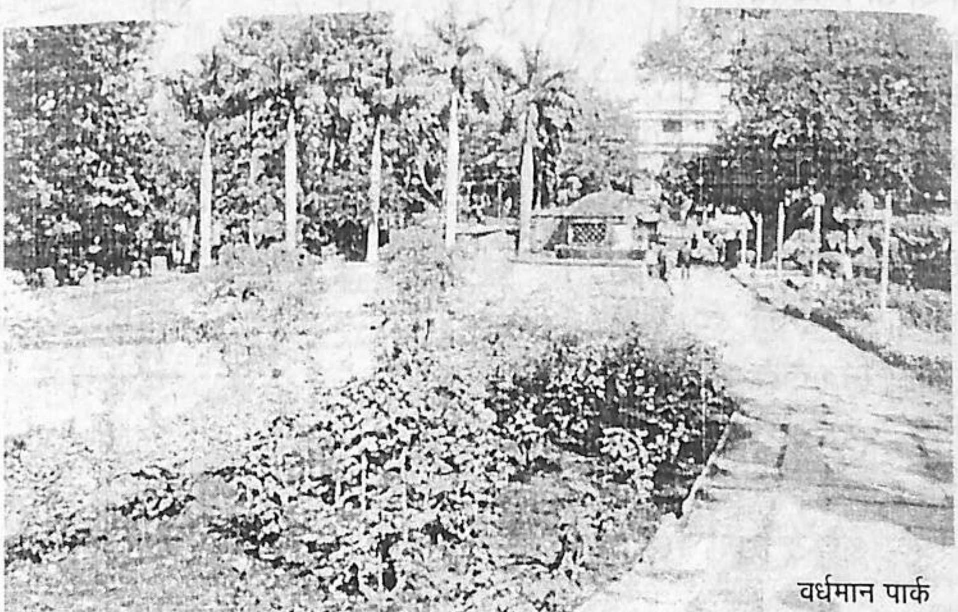
भोपाल का चप्पा-चप्पा मनमोहक है। तुम पशोपेश में पड़ जाओगे, सोचते रहोगे..... हर बार तुम्हें लगेगा, 'हाँ बस यही तो वो चीज़ है जिससे यह शहर इतना खूबसूरत है!' तुम शहर के जिस हिस्से में होगे वही तुम्हें शहर की जान लगेगा। अगर तुम किसी झील के किनारे हो तो तुम सोचोगे यही झील है जिससे यह शहर देखने लायक हो गया है। सर उठाए तुम किसी मस्जिद को निहार रहे होगे, तुम्हें आसानी से यकीन हो जाएगा बस इस इमारत को कम करने से भोपाल, भोपाल न रहेगा। शहर में आने वाला हरेक इस उलझन में तब तक रहता होगा, जब तक वह शहर के चप्पे-चप्पे को नहीं देख लेता होगा। एक-एक व्यक्ति से नहीं मिल लेता होगा। शायद तब उसे पता चलता होगा कि यह शहर इतना खूबसूरत क्यों है। क्यों यहाँ रह जाने का मन करता है।

भोपाल उन दो-चार बड़े शहरों में होगा, जहाँ सड़कों पर इतनी जगह है कि कोई इत्मीनान से हाथ को पूरी तरह खुला छोड़कर चल पाए। दूसरी ओर रिहाइशी हिस्सों में इतनी तंग गलियाँ भी हैं कि दो-तीन लोग एक साथ न गुज़र पाएँ। भोपाल की हर शय में ये विभिन्नताएँ दिखेंगी। पोशाक हो, बोली हो, बोलने का लहज़ा या कहन


कबाड़ से कलाकृति उर्फ चिनार पार्क

हो..... धार्मिक यकीन से लेकर मकान तक! ये तमाम चीजें जुड़ती हैं, और तब यह शहर बनता है।

भोपाल घूमने निकलोगे तो तुम्हें कदम-कदम पर पुरानी इमारतें दिखेंगी। इनमें से कई ऐसी हैं जिन पर तुम्हारी नज़रें ठहर जाएँगी। सबके बारे में तफ़्सील से बताना मुश्किल है, पर हाँ हम दो तीन उन चीज़ों के बारे में जरूर बताएँगे, जिनके बिना भोपाल अधूरा होता। इनमें से एक है ताजुल मसाजिद! मस्जिदों का ताज! दुनिया की तीसरी सबसे विशाल मस्जिद! यह एक ऊँची जगती पर बनी है। इसके परिसर में तीन तालाब हैं। इसके मुख्य द्वार ईवान की ऊँचाई चौहत्तर फुट है। इसमें अंदर एक जनाना हिस्सा है जहाँ महिलाएँ नमाज़ अदा करती हैं। इसी मस्जिद में हर साल तीन दिनों का इज़्तिमा होता है। इस मौके पर देश-विदेश से कई जमातें दुआ करने आती हैं। दुआ होती है सारी दुनिया के चैन और अमन के लिए! शायद ही दुनिया भर के अमन चैन के लिए अलग से किसी और जगह इतना बड़ा धार्मिक आयोजन होता होगा। दुआ के बाद एक बड़ा मेला


वर्धमान पार्क

लगता है। जिसमें तरह-तरह के सामान और किताबें मिलती हैं। भोपाल आने वाला शायद ही कोई पर्यटक इस नायाब मस्जिद को देखे बिना लौटना चाहता होगा।

भोपाल में चमक-दमक वाले बाज़ार हैं। तो पारम्परिक छोटी-छोटी दुकानें भी हैं। इनमें तुम्हें खूबसूरत पतंगों से लेकर महँगी से महँगी कार भी मिलेंगी। इनमें से दो बाज़ार लोगों को खींचने में माहिर हैं – चौक बाज़ार और दूसरा न्यू मार्केट!

झीलों और तालाबों में बड़ा तालाब सबसे बड़ा है। ये दो पहाड़ों के बीच फैला है। इसी के किनारे-किनारे भारत भवन, मानव संग्रहालय और वन विहार जैसी जगहें मिलती जाएँगी। घण्टों घूमोगे, फिर भी कितनी ही चीज़ें छूट जाएँगी। और हर बार, अगली बार फिर आकर देखने के लिए कुछ न कुछ बचता रहेगा। भोपाल शहर ही ऐसा है!

◦ सुशील शुक्ल

मुलाकात सूरमा भोपाली से...

अमाँ खाँ एक दफे की सुनाते हैं। मैं और मामू जंगल गए शिकार खेलने। औ खाँ उस दिन हुआ क्या के हम बस पौंचेइ थे, के एक हाथी जैसा लम्बा-चौड़ा शेर आके सामने खड़ा हो गया। औ खाँ अपने को तो लगा कि मामू से दुआ सलाम होगी इसकी! इसलिए सामने आके खड़ा हो गिया है। इत्ते में खाँ मामू ने बंदूक निकाली! औ खाँ घोड़ा दबा दिया! बड़ी देर तक इंतजार करते रहे पर गोली न निकली! मामू ने शेर को वो एक लात जमाई के शेर ऐसे भागा.. ऐसे भागा के बस पूछोइ मत!! फिर मामू ने बंदूक देखी। औ खाँ हुआ क्या था के एक दिन मामू ने दो तीन मछली पकड़कर नली में डाल दी थीं, हुआ क्याके मछली जिन्दा थीं। एक हफ्ते में बड़ी–बड़ी हो गईं। अब खाँ मछली तो एक हफ्ते रस्ता नई देखेगी न के कब मामू नली से निकालेंगे। औ कब हम बड़े होंगे। औ खाँ उस दिन क्या परेशान हुए कि बस पूछोइ मत! आखिरी वाली मछली मामूइ निकाल रए थे। औ खाँ वो गोली निकलके मामू की हथेली में छेद करती निकल गई। औ खाँ अपने होश फाख्ता हो गए। मैंने कहा मामू डाक्टर को लाता हूँ। मामू हँसते हुए अरे इत्ती सी बात में डाक्टर को क्या परेशान करेंगे। उन्होंने खाँ जेब से रुमाल निकाला और छेद में डालके साफ किया और कहा बस इसे हथेली में बाँध दो।

अमां खाँ! निकल जाओ! स्कूटर ही निकालनी है न! के फुटबॉल खेलना है...



• चित्र : विवेक वर्मा





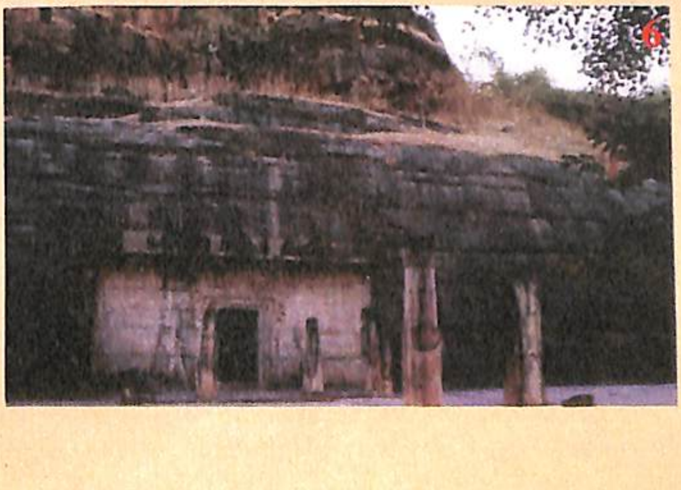




भोपाल के आसपास के पुरातत्वीय स्थल

1. इस्लामनगर
2. शिव मंदिर, भोजपुर
3. सांची स्तूप
4. हेलियोडोरस स्तम्भ, बेसनगर
5. भीमबैठका
6. उदयगिरि की गुफाएँ





चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र. /261/भोपाल/2003-05



तालाब के किनारे बसे, भोपाल के एक हिस्से की साठ साल पुरानी तस्वीर

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-16 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना